तृतीय संशोधित संस्करण

AKSHANSH PUBLICATION

राजस्थान

BSTC

प्रवेश पूर्व परीक्षा-2026

राजस्थान सामान्य ज्ञान | मानसिक योग्यता परीक्षण
हिन्दी | अंग्रेजी | शिक्षण अभिक्षमता

नवगठित 41 जिलों व 7 संभागों पर आधारित

सम्पूर्ण स्टडी गाइड

परिक्षोपयोगी संभावित 4000 + प्रश्नोतरों का संग्रह

2021 से 2025 तक के सभी विगत वर्षों के प्रश्न पत्र हल सहित संकलन

मारवाड़ी सर | कुणाल सर | अनिल सर | शिवानी मैम | नीरज सर

अक्षांश पब्लिकेशन

M. 9079798005, 6376491126

Plot No 1104, Shiksha Mandir, Sec 4, Circle, Main Road, Udaipur

व्याख्यात्मक हल
लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर
के यूट्यूब चैनल पर उपलब्ध

AKSHANSH
PUBLICATION

राजस्थान
डी. एल. एड.
BSTC

प्रवेश पूर्व परीक्षा-2026

राजस्थान सामान्य ज्ञान | मानसिक योग्यता परीक्षण
हिन्दी | अंग्रेजी | शिक्षण अभिक्षमता

नवगठित 41 जिलों व 7 संभागों पर आधारित

सम्पूर्ण स्टडी गाइड

परिक्षोपयोगी संभावित 4000 + प्रश्नोतरों का संग्रह

2021 से 2025 तक के सभी विगत वर्षों के प्रश्न पत्र हल सहित संकलन

"अक्षांश प्रकाशन की समस्त पुस्तकें लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर के अनुभवी शिक्षकों के मार्गदर्शन एवं अक्षांश प्रकाशन की समर्पित टीम के सहयोग से तैयार की गई हैं।"

संपादक
मारवाड़ी सर, कुणाल सर,
अनिल सर, शिवानी मैम, नीरज सर
सह संपादक
राजवर्धन बेगड़, गंगा सिंह, अनोप चंद,
निशांत सोलंकी, प्रकाश मेघवाल, विकास नाथ

प्रकाशन
अक्षांश प्रकाशन, उदयपुर (राज.)

MRP : ₹799

नोट :- अब लक्ष्य क्लासेज़ की सभी आगामी पुस्तकें केवल 'अक्षांश प्रकाशन' के माध्यम से ही प्रकाशित की जाएंगी। ये सभी पुस्तकें बाजार में 'अक्षांश' नाम से ही उपलब्ध होंगी। विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि आगामी समय में 'लक्ष्य' नाम से कोई भी पुस्तक प्रकाशित नहीं की जाएगी। इसलिए कृपया पुस्तक खरीदते समय केवल 'अक्षांश प्रकाशन' के नाम से प्रकाशित और अधिकृत पुस्तकें ही बुक स्टोर्स से प्राप्त करें, ताकि आपको प्रमाणिक, अद्यतन एवं परीक्षा-उपयुक्त सामग्री प्राप्त हो।भविष्य में 'लक्ष्य' नाम से प्रकाशित किसी भी पुस्तक की सामग्री या गुणवत्ता की जिम्मेदारी 'अक्षांश प्रकाशन' या 'लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर' की नहीं होगी।

प्रकाशन

अक्षांश प्रकाशन

Plot No 1104, Shiksha Mandir, Sec 4, Circle,
Main Road, Udaipur

लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर से जुड़ने के लिए QR CODE स्कैन करे

TELEGRAM | INSTAGRAM | YOUTUBE | FACEBOOK | WHATSAPP

बुक कोड - AP0028

©सर्वाधिकार - अक्षांश प्रकाशन
lakshyaclassesudr@gmail.com

मुख्य वितरक - लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर
M. 9079798005, 6376491126

अक्षांश प्रकाशन ने इस पुस्तक के तथ्यों तथा विवरणों को उचित स्त्रोतों से प्राप्त किया है। इस पुस्तक में प्रकाशित सभी प्रकार की सामग्री पूर्णतः तथ्यात्मक विश्लेषण पर आधारित है। इस पुस्तक के किसी भी भाग और सामग्री को अक्षांश प्रकाशन की अनुमति और जानकारी के बिना अन्यत्र प्रकाशित या प्रिन्ट करना अनुचित है, यदि ऐसा पाया जाता है तो व्यक्ति या संस्थान स्वयं जिम्मेदार है।

विषय वस्तु

01 मानसिक योग्यता

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	संख्या & अक्षर श्रृंखला	1-9
2.	लुप्त संख्या	10-15
3.	कोडिंग-डिकोडिंग	16-26
4.	रक्त सम्बन्ध	27-34
5.	दिशा परीक्षण	35-44
6.	घड़ी परीक्षण	45-52
7.	कैलेण्डर	53-59
8.	सादृश्यता	60-67
9.	वर्गीकरण या बेमेल को अलग करना	68-70
10.	वर्णमाला परीक्षण	71-75
11.	तार्किक वेन आरेख	76-80
12.	जल एवं दर्पण छवियाँ	81-85
13.	आकृतियों की गणना	86-91
14.	क्रम परीक्षण	92-97
15.	बैठक व्यवस्था एवं पहेली परीक्षण	98-103
16.	घन, घनाभ और पासा	104-113
17.	आयु परीक्षण	114-116
18.	विविध	117-120
19.	न्याय वाक्य	121-131
20.	कथन और निष्कर्ष	132-138
21.	कथन एवं तर्क	139-142
22.	कथन एवं कार्यवाही	143-146
23.	कथन एवं पूर्वधारणाएँ	147-149

02 शिक्षण अभिक्षमता

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	शिक्षण अधिगम	151 – 164
2.	नेतृत्व गुण	165 – 171
3.	सृजनात्मकता	172 – 176
4.	सतत् एवं समग्र (व्यापक) मूल्यांकन	177 – 186
5.	संप्रेषण	187 – 192
6.	व्यावसायिक अभिवृत्ति	193 – 196
7.	सामाजिक संवेदनशीलता	197 – 204

03 राजस्थान का भूगोल

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	स्थिति एवं विस्तार	206 – 209
2.	भौतिक प्रदेश	210 – 215
3.	अपवाह प्रणाली	216-222
4.	जलवायु	223-228
5.	मृदा	229-230
6.	वन एवं वनस्पति	231-236
7.	कृषि	237-243
8.	सिंचाई परियोजनाएँ	244-247
9.	परिवहन	248-251
10.	खनिज	252-269
11.	जनसंख्या	270-274

04 राजस्थान कला एवं संस्कृति

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	प्रमुख दुर्ग	276-285
2.	महल एवं स्मारक	286-290
3.	हवेलियाँ, बावड़ियाँ एवं छतरियाँ	291-297
4.	मंदिर, मकबरे, मस्जिद एवं दरगाह	298-303
5.	मेले एवं त्योहार	304-310
6.	लोककला एवं हस्तकला	311-320

7.	चित्रकला	321-326
8.	लोक गीत एवं संगीत	327-333
9.	लोक नृत्य एवं नाट्य	334-341
10.	लोक वाद्ययंत्र	342-347
11.	लोक देवता एवं देवियाँ	348-359
12.	संत-सम्प्रदाय	360-366
13.	आभूषण, वेशभूषा एवं खान-पान	367-374
14.	रीति रिवाज एवं प्रथाएँ	375-380
15.	राजस्थानी भाषा, बोलियाँ एवं साहित्य	381-387

05 राजस्थान का इतिहास

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	राजस्थान के इतिहास के स्रोत	389-394
2.	प्रमुख सभ्यताएँ	395-401
3.	प्रमुख राजवंश, प्रशासनिक एवं राजस्व व्यवस्था	402-420
4.	1857 की क्रांति	421-426
5.	किसान आन्दोलन	427-435
6.	जनजातीय आन्दोलन	436-439
7.	राजनीतिक जनजागरण एवं प्रजामण्डल आन्दोलन	440-452
8.	राजस्थान का एकीकरण	453-456
9.	प्रमुख व्यक्तित्व	457-462

06 राजस्थान राजव्यवस्था

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	राज्यपाल	464-466
2.	मुख्यमन्त्री एवं मन्त्रिपरिषद्	467-469
3.	राज्य विधानसभा	470-472
4.	उच्च न्यायालय	473-474
5.	राज्य लोक सेवा आयोग	475-476
6.	राज्य निर्वाचन आयोग	477
7.	राज्य सूचना आयोग	478
8.	राज्य मानवाधिकार आयोग	479
9.	लोकायुक्त	480-481
10.	जिला प्रशासन	482-483
11.	पंचायती राज एवं नगरीय स्वशासन	484-489

07 राजस्थान की अर्थव्यवस्था

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	ग्रामीण विकास	491-494
2.	आर्थिक विकास	495-504
3.	विकास परियोजनाएँ	505-509
4.	कृषि क्षेत्र	510-516
5.	पशुपालन	517-518
6.	राज्य की अर्थव्यवस्था	519-521

08 हिन्दी

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	हिन्दी का सामान्य परिचय	523-526
2.	वाक्य विचार	527-532
3.	संधि एवं संधि विच्छेद	533-544
4.	समास एवं समास विग्रह	545-549
5.	उपसर्ग	550-553
6.	प्रत्यय	554-562
7.	विलोम शब्द	563-573
8.	पर्यायवाची शब्द	574-578
9.	युग्म शब्द	579-584
10.	शब्द शुद्धि	585-588
11.	वाक्य शुद्धि	589-592
12.	मुहावरे	593-601
13.	लोकोक्तियाँ	602-609
14.	वाक्यांश के लिए एक सार्थक शब्द	610-614

09 ENGLISH

S.No.	CHAPTER	PAGE NO.
1.	ARTICLES	616-619
2.	PREPOSITION	620-622
3.	CONNECTIVES (CONJUNCTIONS)	623-624
4.	SENTENCES	625-628
5.	TENSE	629-636
6.	DIRECT AND INDIRECT SPEECH	637-646
7.	VOCABULARY	647-659
8.	SYNONYMS	660-666
9.	ANTONYMS	667-672
10.	SPELLING ERRORS	673
11.	ONE WORD SUBSTITUTION	674-678
12.	READING COMPREHENSION	679-684
13.	CORRECTION OF SENTENCES	685-690
14.	SPOTTING ERROR	691-694

10 विगत वर्ष के प्रश्न पत्र

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	BSTC प्रश्न पत्र -2025 (SHIFT-1)	696-707
2.	BSTC प्रश्न पत्र -2025 (SHIFT-2)	708-719
3.	BSTC प्रश्न पत्र - 2024	720-730
4.	BSTC प्रश्न पत्र - 2023	731-740
5.	BSTC प्रश्न पत्र - 2022	741-752
6.	BSTC प्रश्न पत्र - 2021	753-766

❑❑❑❑

मानसिक योग्यता

संख्या & अक्षर शृंखला (Number & Letter Series)

– इस अध्याय के अन्तर्गत प्रश्न में अंको अथवा अक्षरों (अंग्रेजी) की एक निश्चित श्रृंखला दी होती है जो एक विशेष नियमानुसार होती है हमें उस नियम का पता लगाकर ही अगली संख्या ज्ञात करनी होती है।

– श्रृंखला के प्रश्नों को हल करते समय निम्न बातों का ध्यान रखें

1. गणितीय संक्रिया में काम आने वाली महत्वपूर्ण संख्याओं वर्ग संख्या, घन संख्या, अभाज्य संख्या, सम संख्या, विषम संख्या आदि को कण्ठस्थ याद रखे।

वर्ग संख्याएँ

$1^2 = 1$	$2^2 = 4$	$3^2 = 9$
$4^2 = 16$	$5^2 = 25$	$6^2 = 36$
$7^2 = 49$	$8^2 = 64$	$9^2 = 81$
$10^2 = 100$	$11^2 = 121$	$12^2 = 144$
$13^2 = 169$	$14^2 = 196$	$15^2 = 225$
$16^2 = 256$	$17^2 = 289$	$18^2 = 324$
$19^2 = 361$	$20^2 = 400$	$21^2 = 441$
$22^2 = 484$	$23^2 = 529$	$24^2 = 576$
$25^2 = 625$	$26^2 = 676$	$27^2 = 729$
$28^2 = 784$	$29^2 = 841$	$30^2 = 900$

घन संख्याएँ

$1^3 = 1$	$2^3 = 8$	$3^3 = 27$
$4^3 = 64$	$5^3 = 125$	$6^3 = 216$
$7^3 = 343$	$8^3 = 512$	$9^3 = 729$
$10^3 = 1000$	$11^3 = 1331$	$12^3 = 1728$

1. अभाज्य संख्या-ऐसी संख्या जो 1 तथा स्वंय से भाज्य हो अभाज्य संख्या कहलाती है। 1 से 100 तक कुल 25 अभाज्य संख्या होती है।

– 2, 3, 5, 7, 11, 13, 17, 19, 23, 29, 31, 37, 41, 43, 47, 53, 59, 61, 67, 71, 73, 79, 83, 89, 97

2. श्रृंखला को हल करने के लिए कोई शॉर्ट ट्रिक नहीं है बल्कि इसका निरंतर अभ्यास ही आपको इस अध्याय पर मजबूत पकड़ बनाएगा।
3. प्रश्न की भाषा को समझकर प्रश्न को हल करने का प्रयास करे।
4. हमारे अनुभव के अनुसार प्रतियोगी परीक्षाओं में अंतर के नियम का सर्वाधिक प्रयोग होता है अतः इस नियम का अधिक से अधिक प्रयोग करें।

महत्वपूर्ण नियम

Rule of Gap (अंतर का नियम)

– इस नियम के अनुसार दिए गए प्रश्न में पहली और दूसरी संख्या का अंतर, दूसरी और तीसरी संख्या का अंतर और आगे भी यही क्रम जारी रखते हुए अंतर की श्रृंखला का समूह ज्ञात करके उसी आधार पर अगली संख्या प्राप्त की जाती है। इस नियम के उदाहरण अग्रांकित है

वर्णमाला श्रृंखला

– इसके अन्तर्गत दिए गए प्रश्न में अंग्रेजी वर्णों की एक निश्चित श्रृंखला दी जाती है अतः इस श्रृंखला में वर्णों को उनके वर्णमाला क्रमांक देकर अंकीय श्रृंखला बनाई जाती है और प्रश्न को हल किया जाता है।

अंग्रेजी वर्णमाला श्रृंखला

– अंग्रेजी वर्णमाला 26 अक्षरों को विभिन्न प्रकार की श्रेणियों में क्रमित करके श्रेणी क्रम बनाया जाता है। वर्णमाला के अक्षरों की कोई न कोई एक निश्चित श्रेणी क्रम होती है।

अंग्रेजी वर्णमाला

अंग्रेजी वर्णमाला के अक्षरों का स्थानीय क्रमांकित मान के साथ निरूपण								
A	B	C	D	E	F	G	H	I
1	2	3	4	5	6	7	8	9
J	K	L	M	N	O	P	Q	R
10	11	12	13	14	15	16	17	18
S	T	U	V	W	X	Y	Z	
19	20	21	22	23	24	25	26	

अंग्रेजी वर्णमाला का विपरीत क्रम								
A	B	C	D	E	F	G	H	I
26	25	24	23	22	21	20	19	18
J	K	L	M	N	O	P	Q	R
17	16	15	14	13	12	11	10	9
S	T	U	V	W	X	Y	Z	
8	7	6	5	4	3	2	1	

बड़े अक्षरों की शृंखला

– इस प्रकार की शृंखला के अंतर्गत कुछ अक्षर या अक्षर समूह एक निश्चित तरीके के आधार पर शृंखला के रूप में दिए होते हैं। इस शृंखला के एक या कुछ पद रिक्त होते है जिन्हें शृंखला के तरीके को ज्ञात करके करना होता है।

– इस प्रकार के प्रश्नों को हल करने के लिए आपको प्रत्येक अक्षर की वर्णमाला में स्थिति (Position) को याद कर लेना चाहिए तथा यह भी ध्यान रखना चाहिए कि वर्णमाला के वृत्तीय अवधारणा का ख्याल रहे, यानि की Z के बाद फिर A, B, C, D शुरू हो जाएगा।

छोटे अक्षरों की शृंखला

– इस प्रकार के प्रश्नों के अंतर्गत अक्षरों की एक शृंखला दी गई होती है। इस प्रकार की शृंखला अंग्रेजी वर्णमाला के छोटे अक्षरों को विभिन्न तरीकों में आवर्तित करके बनायी जाती है जो बायीं ओर से दायीं ओर किसी विशेष क्रम में बदलते हैं। शृंखला में एक से अधिक रिक्त स्थान हो सकते हैं। परीक्षार्थी को यह ज्ञात करना होता है कि यदि अक्षर इसी क्रम में बदलते रहें तो रिक्त स्थानों पर कौन-से अक्षर होने चाहिए। दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर शृंखला को पूर्ण करना होता है।

(A) शृंखला के अंतर्गत केवल एक समान समूह पुनरावृत्ति है।
(B) जब शृंखला में एक समान यह समूह की पुनरावृत्ति न हो बल्कि समूह के अन्तर किसी एक अक्षर की संख्या में लगातार वृद्धि होती जाए।
(C) शृंखला के प्रत्येक समूह में अलग-अलग अक्षरों की पुनरावृत्ति।
(D) शृंखला के अंतर्गत दो अक्षर समूहों का एकांतर में आना।

अभ्यास प्रश्न

निर्देश :- (1-15)

नीचे दिए गए प्रत्येक प्रश्न में अंक शृंखला दी गई है, जिसमें एक या एक से अधिक पद लुप्त हैं, तब दिए गए विकल्पों में से लुप्त पद ज्ञात कीजिए-

1. 120, 99, 80, 63, 48, ?
(a) 35 (b) 38
(c) 39 (d) 40

2. 0, 6, 24, 60, 120, 210, ?
(a) 240 (b) 290
(c) 336 (d) 504

3. 4, 9, 25, ?, 121, 169, 289, 361
(a) 49 (b) 64
(c) 36 (d) 81

4. 1, 3, 3, 6, 7, 9, ?, 12, 21
(a) 10 (b) 11
(c) 12 (d) 13

5. 2, 5, 9, ?, 20, 27
(a) 14 (b) 16
(c) 18 (d) 20

6. 1, 6, 15, ?, 45, 66, 91
(a) 25 (b) 26
(c) 27 (d) 28

7. 22, 24, 28, ?, 52, 84
(a) 38 (b) 36
(c) 42 (d) 46

8. 240, ?, 120, 40, 10, 2
(a) 180 (b) 240
(c) 420 (d) 480

9. 28, 33, 31, 36, ?, 39
(a) 32 (b) 34
(c) 38 (d) 40

10. 1, 5, 13, 25, 41, ?
(a) 51 (b) 57
(c) 61 (d) 63

11. 6, 17, 39, 72, ?
(a) 83 (b) 94
(c) 116 (d) 127

12. 2, 3, 5, 7, 11, ?, 17
(a) 12 (b) 13
(c) 14 (d) 15

13. 1, 4, 27, 16, ?, 36, 343
(a) 25 (b) 87
(c) 120 (d) 125

14. 1, 1, 4, 8, 9, 27, 16, ?
(a) 32 (b) 64
(c) 81 (d) 256

15. 10, 100, 200, 310, ?
(a) 400 (b) 410
(c) 430 (d) 420

निर्देश :- (16-25)

नीचे दिए गए प्रत्येक प्रश्न में अक्षर शृंखला दी गई है, जिसमें एक या एक से अधिक पद लुप्त हैं, तब दिए गए विकल्पों में से लुप्त पद ज्ञात कीजिए-

16. A, C, F, J, ?, ?
(a) L, P (b) M, O
(c) O, U (d) R, V

17. B, D, F, I, L, P, ?
(a) R (b) T
(c) S (d) U

18. BMO, EOQ, HQS, ?
(a) KSU (b) LMN
(c) SOV (d) SOW

19. R, U, X, A, D, ?
(a) F (b) G
(c) H (d) I

20. a, d, c, f, ?, h, g, ?, i
(a) e, j (b) e, k
(c) f, j (d) j, e

21. AC, FH, KM, PR, ?
(a) UW (b) VW
(c) UX (d) TV

22. U, B, I, P, W, ?
(a) D (b) F
(c) Q (d) X

23. Z, ?, T, ?, N, ?, H, ?, B
(a) W, R, K, E (b) X, Q, K, E
(c) X, R, K, E (d) W, Q, K, E

24. A, G, L, P, S, ?
(a) U (b) W
(c) X (d) Y

25. T, R, P, N, L, ?, ?
(a) J, G (b) K, H
(c) J, H (d) K, I

निर्देश :-(26-35)

नीचे दिए गए प्रत्येक प्रश्न में एक अक्षर-अंक शृंखला दी गई है जिसके एक या अधिक पद लुप्त हैं, तब दिए गए विकल्पों में से लुप्त पद ज्ञात कीजिए-

26. b3P, c6R, d12T, e24V, ?
(a) f48X (b) f46X
(c) f48W (d) g48X

शिक्षण अभिक्षमता

शिक्षण अधिगम 01

शिक्षण अधिगम (Teaching Learning):-

- शिक्षण का अर्थ ज्ञान प्रदान करना, कौशल का विकास करना, पाठ पढ़ाना, उन्हें उत्साहित करना आदि है।
- सामान्य अर्थों में शिक्षण का अर्थ अध्यापक द्वारा अपनाये गये व्यवसाय अथवा किसी व्यक्ति विशेष को कुछ सीखाने या कुछ विशेष ज्ञान, कौशल, रुचियों और अभिवृत्ति आदि को अर्जित करने में दी जाने वाली सहायता से लिया जाता है।
- शिक्षण एक त्रिस्तरीय प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत पाठ्यक्रम के द्वारा शिक्षक व शिक्षार्थी के मध्य अन्त क्रिया होती है।

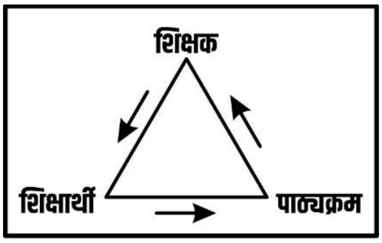

- सारांश में कहा जा सकता है कि शिक्षण वह प्रक्रिया है जो सीखने को प्रभावित करती है।
- उसका स्वरूप विभिन्न परिस्थितियों में अलग-अलग हो सकता है परंतु उन सभी का उद्देश्य छात्रों को सिखाना होता है।

शिक्षण की संकल्पना (Concept of Teaching)

- शिक्षण विद्यार्थी को कक्षा में सूचनाएँ देने मात्र तक सीमित नहीं होता वरन् इस प्रक्रिया में बच्चे का उद्दीपन, मार्ग दर्शन, दिशा-निर्देशन और सीखने के लिए प्रोत्साहन जैसी प्रक्रियाएँ सन्निहित होती है।
- उद्दीपन बच्चों को नई चीजे सीखने के लिए अभिप्रेरित करता है।
- शिक्षण दो या दो से अधिक व्यक्तियों के मध्य एक शैक्षिक सम्प्रेषण है, जो अपने विचारों से एक-दूसरे को प्रभावित करते है और अंतः क्रिया की इस प्रक्रिया से कुछ सीखते है।
- यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें शिक्षार्थी, शिक्षक, पाठ्यचर्या तथा अन्य सम्बद्ध चरों को किसी पूर्व निर्धारित उद्देश्य की प्राप्ति के लिए व्यवस्थित रूप से संगठित किया जाता है। शिक्षण के समय शिक्षार्थियों में व्यवहारगत परिवर्तन लाने के लिए शिक्षक की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।
- शिक्षण की त्रिस्तरीय संकल्पना जॉन ड्यूवी ने प्रस्तुत की थी, जिसमें शिक्षक, शिक्षार्थी व पाठ्यक्रम को सम्मिलित किया गया।
- द्विस्तरीय संकल्पना जॉन एड्म्स ने प्रस्तुत की थी, जिसमें शिक्षक और शिक्षार्थी को सम्मिलित किया गया।

शिक्षण की परिभाषाएं (Defination of Teaching) :-

- **क्लार्क के अनुसार,** "शिक्षण वह प्रक्रिया है जिसके प्रारूप तथा संचालन की व्यवस्था इसलिये की जाती है, जिससे शिक्षार्थियों के व्यवहार में परिवर्तन लाया जा सके।"
- **स्मिथ के अनुसार**, "शिक्षण एक उद्देश्य निर्देशित क्रिया है।"
- **बी.एफ. स्कीनर के अनुसार,** "शिक्षण पुनर्बलन की आकस्मिकताओं का क्रम है।"
- **एन.एल. गेज के अनुसार,** "शिक्षण एक प्रकार का पारस्परिक प्रभाव है जिसका उद्देश्य है दूसरे व्यक्ति के व्यवहारों में वांछित परिवर्तन लाना।"
- **जेम्स. एम. थाइन,** "समस्त शिक्षण का अर्थ है सीखने में वृद्धि करना।"
- **डॉ. एन.एन. मुखर्जी** के अनुसार, "शिक्षण कार्य प्रत्येक व्यक्ति के चाय के प्याले के समान नहीं है, यह तो कला और विज्ञान है।"
- शिक्षण एक ऐसा कार्य है, जिसमें कम से कम दो लोगों की आवश्यकता होती है तथा इन दोनों के बीच विचारों/विषय-वस्तु का आदान-प्रदान होता है, इसलिए शिक्षण एक प्रक्रिया के रूप में माना जाता है।
- **मॉरीस के अनुसार, "**शिक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें एक अधिक परिपक्व व्यक्ति अन्त: संबंधों के द्वारा एक कम परिपक्व व्यक्ति को सिखाता है।"
- **जैक्सन** के अनुसार, "शिक्षण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक परिपक्व व्यक्ति (शिक्षक) एक अपरिपक्व व्यक्ति (शिक्षार्थी) को अन्त:क्रिया के द्वारा शिक्षा प्रदान करता है।"
- **B.O. स्मिथ – "**शिक्षण क्रियाओं की एक विधि है जो सीखने की उत्सुकता जाग्रत करती है।"
- **गेज –** "शिक्षण का उद्देश्य दूसरों के व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाना है। इसमें पारस्परिक प्रभाव शक्ति होती है जिसमें दूसरों के व्यावहारिक क्षमता के विकास का लक्ष्य होता है।"
- **रायबर्न –** "शिक्षण छात्रों को उनकी शक्तियों के विकास में योगदान देता है।"
- **बर्टन –** "शिक्षण अधिगम हेतु उद्दीपन मार्ग प्रदर्शन व दिशा बोध है।"

शिक्षण के उद्देश्य (Aims of Teaching):-

- शिक्षण में शिक्षक, शिक्षार्थी एवं पाठ्य वस्तु के मध्य परस्पर अंतःक्रिया होती है, जिसके परिणामस्वरूप शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति की जाती है।
- **ब्लूम के अनुसार**, "शैक्षिक उद्देश्य केवल यह लक्ष्य नहीं है जिनके लिए पाठ्यक्रम बनाया जाता है और मार्गदर्शन किया जाता है, बल्कि वह लक्ष्य भी है जो शिक्षा हेतु अनिवार्य प्रविधियों के निर्माण तथा उपयोग हेतु विस्तृत विनिर्देश भी देते हैं।"

शिक्षण द्विमुखी प्रक्रिया-

- एडम्स ने शिक्षा को द्विमुखी प्रक्रिया माना है।
- इस प्रक्रिया में शिक्षक और छात्र दो व्यक्ति शामिल होते है।
- यह एक इस प्रकार की प्रक्रिया है जिसमें एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के विकास में बदलाव के लिए कार्य करता है।

शिक्षण त्रिमुखी प्रक्रिया-

- जॉन डी.वी. और रायबर्न के अनुसार शिक्षा की प्रक्रिया त्रिमुखी है।
- वर्तमान परिवेश में शिक्षक, शिक्षार्थी एवं विषयवस्तु के रूप में शिक्षण प्रक्रिया के तीन सोपान है।

- वर्तमान शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक एवं शिक्षार्थी मानवीय संसाधन के रूप में तथा विषयवस्तु का उपयोग भौतिक संसाधन के रूप में होता है।

शिक्षण की प्रकृति (Nature of Teaching) :-

- **शिक्षण एक उपचार विधि है –** शिक्षण में छात्रों की कमजोरियों का निदान करके उन्हें सुधार के लिए उपचार बताया जाता है।
- **शिक्षण एक त्रिध्रुवीय प्रक्रिया है-** शिक्षण की त्रिध्रुवीय प्रक्रिया में ब्लूम ने शिक्षण के तीन पक्ष बताये है।
  i. शिक्षण उद्देश्य
  ii. सीखने के अनुभव
  iii. व्यवहार परिवर्तन
- **शिक्षण एक आमने-सामने होने वाली प्रक्रिया है-** शिक्षण प्रक्रिया के समय शिक्षक तथा छात्र आमने-सामने बैठते हैं।
- **शिक्षण एक विकासात्मक प्रक्रिया है-** शिक्षण प्रक्रिया के तहत् बालकों का सर्वांगीण विकास होता है।
- शिक्षण एक औपचारिक तथा अनौपचारिक प्रक्रिया है।
- शिक्षण एक उद्देश्य (सोद्देश्य) प्रक्रिया है।
- शिक्षण का मापन किया जाता है।
- शिक्षण एक अंत:प्रक्रिया है।
- शिक्षण कला तथा विज्ञान दोनों ही है।
- यह एक अन्त: क्रिया है।
- यह एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है।
- यह एक सामाजिक प्रक्रिया है।
- यह एक सोद्देश्य प्रक्रिया है।
- यह एक उपचार विधि है।
- यह व्यावसायिक प्रक्रिया है।
- यह एक तार्किक क्रिया है।
- इसका मापन किया जाता है।
- इसमें सुधार तथा विकास किया जाता है।
- यह एक निर्देशन की प्रक्रिया है।
- यह एक औपचारिक तथा अनौपचारिक क्रिया है।
- यह पथ-प्रदर्शन है।
- यह संवेगों का प्रशिक्षण है।

शिक्षण अधिगम के सोपान

- शिक्षण अधिगम के चार सोपान है-

1. **नियोजन**
- इसमें पाठ्यवस्तु विश्लेषण, कार्य विश्लेषण, उद्देश्यों का निर्धारण व उनको लिखना आदि क्रियाएँ की जाती हैं।

2. **व्यवस्था**
- इसमें शिक्षण विधि का चयन, विषयवस्तु, श्रव्य-दृश्य सामग्री, सम्प्रेषण युक्तियों की सहायता से अधिगम वातावरण का निर्माण किया जाता है।

3. **मार्गदर्शन**
- शिक्षक छात्रों को प्रेरित करता है।

4. **नियंत्रण**
- शिक्षण व अधिगम की सफलता को जाँचना, पुन: योजना बनाना और मूल्यांकन करना।

शिक्षण के चर (Variables of Teaching):-

- चर किसी भी विषय-वस्तु से संबंधित वे घटक (Component) होते है जो प्रभावित करते है या प्रभावित होते है।
- शिक्षण प्रक्रिया के तीन प्रकार से चरों का अध्ययन किया जाता है जो निम्नलिखित हैं-

1. **स्वतंत्र चर (Independent Variable)**
- शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक को स्वतंत्र चर की संज्ञा दी गयी है। शिक्षक ही शिक्षण व्यवस्था नियोजन तथा परिचालन का कार्य करता है।

2. **आश्रित चर (Dependent Variable)**
- शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षार्थी को आश्रित चर की संज्ञा दी गयी है। शिक्षार्थी को शिक्षण व्यवस्था, नियोजन तथा परिचालन के अनुरूप ही क्रियाशील रहना पड़ता है।

3. **हस्तक्षेपी या मध्यपथ चर (Intervening Variable)**
- शिक्षण प्रक्रिया में हस्तक्षेपी या मध्यपथ चर वे चर है जो स्वतंत्र तथा आश्रित चर के मध्य सक्रिय होते हैं।
- यह पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियाँ, मूल्यांकन तकनीकें आदि हैं। ये चर मिलकर शिक्षण प्रक्रिया को पूर्ण करते है।

शिक्षण के प्रकार (Types of Teaching):-

- शिक्षण एक सामाजिक प्रक्रिया है। शिक्षण का विभाजन भी कई प्रकार से किया जाता है।
- शिक्षण विभाजन का आधार निम्नलिखित है-

1. **शिक्षण क्रियाओं की दृष्टि से –**
- शिक्षण में अनेक प्रकार की क्रियाएं की जाती है। उन सभी क्रियाओं को तीन भागों में विभाजित कर सकते है-
  i. प्रस्तुतीकरण
  ii. प्रदर्शन
  iii. कार्य।

2. **शिक्षण के उद्देश्यों की दृष्टि से**
- शिक्षण के निम्नलिखित तीन उद्देश्य है-
  i. ज्ञानात्मक
  ii. भावात्मक
  iii. क्रियात्मक

3. **शिक्षण के स्तरों की दृष्टि से –**
- शिक्षण को निम्नलिखित तीन स्तरों में विभाजित किया गया है-

स्मृति स्तर

- शिक्षण के स्मृति स्तर के प्रवर्तक हरबर्ट स्पेन्सर थे।
- इसमें शिक्षण अधिगम मात्र स्मृति के सहारे टिका रहता है।

राजस्थान का भूगोल

राजस्थान का परिचय

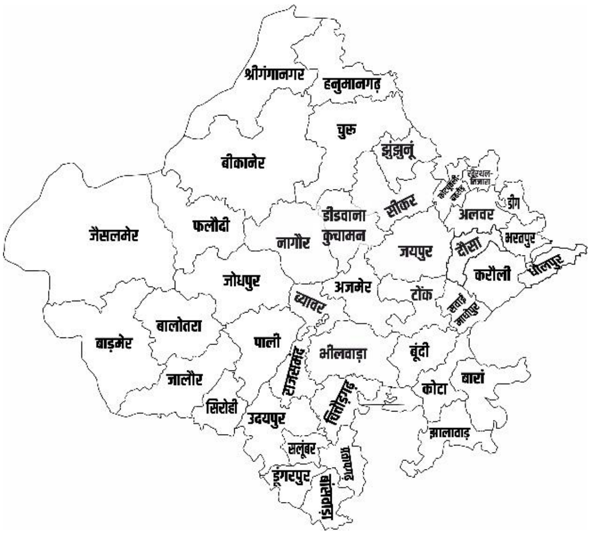

- राजस्थान क्षेत्रफल के हिसाब से भारत का सबसे बड़ा राज्य है और यह देश के उत्तर–पश्चिम में स्थित है। इसका कुल क्षेत्रफल 3,42,239 वर्ग किलोमीटर है, (1,32,139 वर्ग मील) जो भारत के कुल क्षेत्रफल का 10.41% या 1/10वाँ भाग या दसवां हिस्सा है।
- विश्व के कुल क्षेत्रफल में राजस्थान का योगदान 0.25% है।
- (1 नवम्बर, 2000 को मध्य प्रदेश से छत्तीसगढ़ राज्य के अलग होने से राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य बना।)
- क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत के पाँच बड़े राज्य क्रमशः राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश और आन्ध्र प्रदेश है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि राजस्थान श्रीलंका से पाँच गुना, चेकोस्लोवाकिया से तीन गुना, इजराइल से सत्रह गुना, ब्रिटेन से (1.5 /2 गुना) है।
- जापान, कांगो रिपब्लिक, फिनलैंड और जर्मनी के क्षेत्रफल राजस्थान के क्षेत्रफल लगभग बराबर है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान के तीन बड़े जिले –
  1. जैसलमेर 2. बीकानेर
  3. बाड़मेर

राजस्थान की स्थिति, विस्तार एवं आकृति

राजस्थान की ग्लोबीय स्थिति

अक्षांशीय स्थिति
अक्षांशीय दृष्टि से राजस्थान उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित है।)

देशांतरीय स्थिति
देशांतरीय दृष्टि से राजस्थान पूर्वी गोलार्द्ध में स्थित है।)

- ग्लोब या विश्व के मानचित्र में राजस्थान की स्थिति उत्तर–पूर्व (ईशान कोण) में है।
- राजस्थान की आकृति विषम चतुष्कोणीय चतुर्भुजाकार या पतंगाकार है।
- इस आकृति के बारे में सर्वप्रथम 'टी.एच. हेंडले' ने बताया।

राजस्थान का अक्षांशीय एवं देशांतरीय विस्तार:–

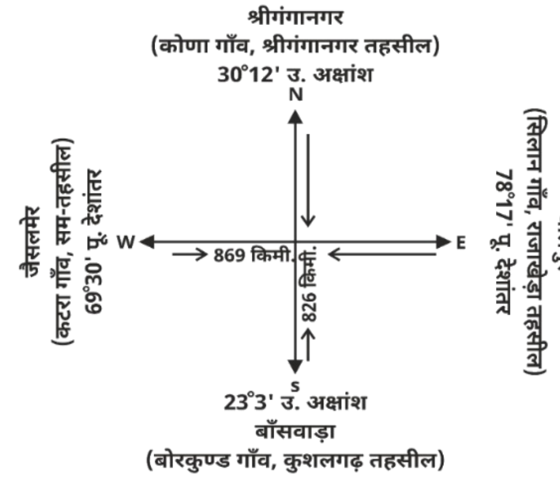

राजस्थान का अक्षांशीय विस्तार:–

- राजस्थान का अक्षांशीय विस्तार 23°03' उत्तरी अक्षांश से 30°12' उत्तरी अक्षांश तक है।
- राजस्थान का अक्षांशीय विस्तार 7°9' अक्षांशों के मध्य है।
- राजस्थान की उत्तर से दक्षिण लम्बाई 826 किलोमीटर है।
- राजस्थान का उत्तरतम बिन्दु कोणा गाँव (श्रीगंगानगर) है।
- राजस्थान का दक्षिणतम बिन्दु बोरकुण्ड (बाँसवाड़ा) है।

राजस्थान का देशांतरीय विस्तार:–

- राजस्थान का देशान्तरीय विस्तार 69°30' पूर्वी देशांतर से 78°17' पूर्वी देशांतर तक है।
- राजस्थान का देशांतरीय विस्तार 8°47' देशांतरों के मध्य है।
- राजस्थान की पूर्व से पश्चिम चौड़ाई 869 किलोमीटर है।
- राजस्थान का पूर्वी बिन्दु सिलाना गाँव (धौलपुर) है।
- राजस्थान का पश्चिमी बिन्दु कटरा गाँव (जैसलमेर) है।
- कर्क रेखा $23\frac{1°}{2}$ उत्तरी अक्षांश, जिसे कर्क रेखा भी कहते है, यह राजस्थान के दक्षिणी भाग से निकलती है।
- कर्क रेखा भारत के आठ राज्यों गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा व मिजोरम से होकर गुजरती है।

राजस्थान का विस्तार:–

स्थलीय सीमा–

- राजस्थान की कुल स्थलीय सीमा 5,920 किलोमीटर है, जिसमें से 1,070 किलोमीटर अन्तर्राष्ट्रीय सीमा तथा 4,850 किलोमीटर अन्तर्राज्यीय सीमा है।

अन्तर्राष्ट्रीय सीमा–

- राजस्थान की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पाकिस्तान के साथ लगती है, जिसका नाम 'रेडक्लिफ रेखा' है।

रेडक्लिफ रेखा

- रेडक्लिफ रेखा एक कृत्रिम रेखा है।
- रेडक्लिफ रेखा भारत और पाकिस्तान के बीच निर्धारित की गई है।
- रेडक्लिफ लाइन का निर्धारण 17 अगस्त, 1947 को हुआ था।

- रेडक्लिफ रेखा पर भारत के 3 राज्य और 2 केन्द्र शासित प्रदेश स्थित हैं–

तीन राज्य–

1. पंजाब 2. राजस्थान
3. गुजरात

दो केन्द्र शासित प्रदेश–

1. जम्मू–कश्मीर 2. लद्दाख

- रेडक्लिफ लाइन की कुल लम्बाई 3,323 किलोमीटर है, जिसमें से राजस्थान के साथ 1,070 किलोमीटर की सीमा लगती है।
- इस अन्तर्राष्ट्रीय रेखा का नामकरण ब्रिटिश 'वकील सिरिल रेडक्लिफ' के नाम पर किया गया था।
- अन्तर्राष्ट्रीय रेखा की शुरुआत श्रीगंगानगर जिले के हिन्दूमल कोट से शुरू होकर बाड़मेर जिले के भागल गाँव (बाखासर) तक है। राजस्थान के 5 जिले अन्तर्राष्ट्रीय रेखा पर स्थित हैं जो कि निम्नलिखित हैं–

1.	श्रीगंगानगर	210 किलोमीटर
2.	बीकानेर	168 किलोमीटर
3.	जैसलमेर	464 किलोमीटर
4.	बाड़मेर	228 किलोमीटर
5	फलोदी	-

- अन्तर्राष्ट्रीय–सीमा पर स्थित जिलों के अतिरिक्त सबसे नजदीक जिला–मुख्यालय श्रीगंगानगर तथा सबसे दूर धौलपुर है।
- रेडक्लिफ पर पाकिस्तान के 9 जिले स्थित हैं– पंजाब प्रान्त के 3 जिले बहावलनगर, बहावलपुर, रहीमयार खां जिले तथा सिंध प्रांत के 6 जिले घोटकी, सुक्कुर, खैरपुर, संघर, उमरकोट व थारपारकर राजस्थान के साथ अन्तर्राष्ट्रीय सीमा बनाते हैं।

अन्तर्राज्यीय–सीमा–

- राजस्थान राज्य की स्थलीय सीमा पाँच राज्यों के साथ लगती है।
- यह अन्तर्राज्यीय सीमा 4,850 किलोमीटर है।
- राजस्थान के उत्तर में पंजाब राज्य है।
- राजस्थान के उत्तर–पूर्व में हरियाणा राज्य है।
- राजस्थान के पूर्व में उत्तर प्रदेश राज्य है।
- राजस्थान के दक्षिण–पूर्व में मध्य प्रदेश राज्य है।
- राजस्थान के दक्षिण–पश्चिम में गुजरात राज्य है।

पंजाब राज्य–

- यह राजस्थान के साथ न्यूनतम सीमा 89 किलोमीटर बनाता है।
- पंजाब राज्य की सीमा पर स्थित राजस्थान के दो जिले हैं।
- श्रीगंगानगर पंजाब के साथ सर्वाधिक व हनुमानगढ़ न्यूनतम सीमा बनाता है।

हरियाणा राज्य–

- हरियाणा राज्य राजस्थान के साथ 1,262 किलोमीटर की सीमा बनाता है। हरियाणा के साथ राजस्थान के हनुमानगढ़, चूरू, झुंझुनूँ, सीकर, कोटपूतली - बहरोड, खैरथल – तिजारा, डीग, अलवर जिले सीमा बनाते हैं।

उत्तर प्रदेश राज्य–

- उत्तर प्रदेश राज्य राजस्थान के साथ 877 किलोमीटर की सीमा बनाता है।
- उत्तर प्रदेश के साथ राजस्थान के 3 जिले सीमा बनाते हैं–
  1. भरतपुर
  2. धौलपुर
  3. डीग
- उत्तर प्रदेश के दो जिलों की सीमाएँ राजस्थान के साथ लगती हैं–
  1. मथुरा
  2. आगरा

मध्य प्रदेश राज्य–

- मध्य प्रदेश राज्य राजस्थान के साथ 1,600 किलोमीटर की सीमा बनाता है।
- **राजस्थान के 10 जिले मध्य प्रदेश के साथ सीमा बनाते हैं–**
  1. धौलपुर 2. करौली
  3. सवाई माधोपुर 4. कोटा
  5. बाराँ 6. झालावाड़
  7. चित्तौड़गढ़ 8. भीलवाड़ा
  9. प्रतापगढ़ 10. बाँसवाड़ा।
- कोटा मध्य प्रदेश के साथ में दो बार सीमा बनाता है।

गुजरात राज्य–

- गुजरात राज्य राजस्थान के साथ 1,022 किलोमीटर की सीमा बनाता है।
- गुजरात के साथ राजस्थान के बाँसवाड़ा, डूँगरपुर, उदयपुर, जालोर, सिरोही, बाड़मेर जिले सीमा बनाते हैं।
- राज्य के सर्वाधिक निकट स्थित बंदरगाह कांडला बंदरगाह (गुजरात) है।
- राजस्थान के चार ऐसे जिले हैं जो दो–दो राज्यों के साथ सीमा बनाते हैं–
  1. हनुमानगढ़ – पंजाब व हरियाणा।
  2. डीग – हरियाणा व उत्तर प्रदेश।
  3. धौलपुर – उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश।
  4. बाँसवाड़ा – मध्य प्रदेश व गुजरात।
- राजस्थान के 2 जिले अन्तर्राज्यीय व अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर स्थित हैं–
  1. श्रीगंगानगर – पाकिस्तान व पंजाब।
  2. बाड़मेर – पाकिस्तान व गुजरात।
- कोटा एवं चित्तौड़गढ़ राजस्थान के वे जिले है जो एक ही राज्य के साथ 2 बार सीमा बनाते है।

संभागीय व्यवस्था

* संभागीय व्यवस्था की शुरुआत मनोनीत मुख्यमंत्री हीरालाल शास्त्री जी ने 1949 में की।
* अप्रैल, 1962 में मोहनलाल सुखाडिया सरकार के द्वारा संभागीय व्यवस्था को समाप्त कर दिया गया।
* 26 जनवरी, 1987 को हरिदेव जोशी सरकार के द्वारा संभागीय व्यवस्था की शुरुआत दुबारा की गई तथा 1987 में जयपुर संभाग से अलग होकर नया संभाग राजस्थान का छठा संभाग अजमेर को बनाया गया।
* 4 जून, 2005 को वसुंधरा सरकार द्वारा राजस्थान का 7वां संभाग भरतपुर को बनाया गया।

राजस्थान की
कला एवं संस्कृति

प्रमुख दुर्ग

01

– **शुक्र नीति** - राज्य को मानव शरीर का अंग मानते हुए शुक्र नीति के अनुसार दुर्ग को शरीर के प्रमुख अंग **'हाथ'** की संज्ञा दी गई है।
– शुक्र नीति के अनुसार **सैन्य दुर्ग सर्वश्रेष्ठ** श्रेणी का **दुर्ग** है।

शुक्र नीति के अनुसार दुर्ग 9 श्रेणियों के होते हैं-

1. **गिरी दुर्ग** – पहाड़ी पर निर्मित दुर्ग। राजस्थान के अधिकांश दुर्ग इसी श्रेणी में निर्मित है।
   उदाहरण - मेहरानगढ़(जोधपुर), तारागढ़(अजमेर)।
2. **एरण दुर्ग –** ऐसा दुर्ग जहाँ तक पहुँचने का मार्ग कठिन और दुर्गम हो।
   उदाहरण - चित्तौडगढ़ और जालौर दुर्ग।
3 **वन दुर्ग –** घने जंगलों में निर्मित दुर्ग।
   उदाहरण - सिवाना का दुर्ग।
4. **धान्वन दुर्ग –** जिसके चारों तरफ रेतीला मैदान।
   उदाहरण - जैसलमेर का दुर्ग।
5. **जल दुर्ग –** नदियों के संगम स्थल पर निर्मित दुर्ग।
   उदाहरण - गागरोण दुर्ग।
6. **पारिख दुर्ग –** चारों तरफ गहरी खाई युक्त दुर्ग।
   उदाहरण- भरतपुर दुर्ग, जूनागढ़ दुर्ग।
7. **पारिध दुर्ग –** ऐसा दुर्ग जिसके चारों तरफ परकोटा हो।
   उदाहरण- चित्तौडगढ़, जैसलमेर दुर्ग।
8. **सैन्य दुर्ग –** ऐसा दुर्ग जिसमें सैनिक निवास करते हो।
9. **सहाय दुर्ग –** जहाँ सैनिक व आमजन दोनों निवास करते हो।

– राजस्थान में महाराष्ट्र एवं मध्य प्रदेश के पश्चात् सर्वाधिक दुर्गों का निर्माण हुआ है।
– राजस्थान में दुर्गों के स्थापना का विकास का प्रथम आधार **कालीबंगा की खुदाई** में मिलता है।

कौटिल्य के अनुसार दुर्ग की 4 श्रेणियाँ है-

– 1. औदुक दुर्ग 2. पर्वत दुर्ग
3. धान्वन दुर्ग 4. वन दुर्ग
– **चित्तौड़ दुर्ग** धान्वन श्रेणी के दुर्ग को छोड़कर सभी श्रेणी का दुर्ग है।

राजस्थान के 6 दुर्ग यूनेस्को की वर्ल्ड हेरिटेज साइट में शामिल -

– 1. आमेर दुर्ग 2. गागरोण दुर्ग
3. कुम्भलगढ़ दुर्ग 4. जैसलमेर दुर्ग
5. रणथम्भौर दुर्ग 6. चित्तौड़गढ़ दुर्ग।
– ये दुर्ग **जून, 2013** में नोमपेन्ह (कम्बोडिया) में हुई वर्ल्ड हेरिटेज कमेटी की बैठक में यूनेस्को साइट की सूची में शामिल किए गये।

राजस्थान के प्रसिद्ध दुर्ग-

– राजस्थान का सबसे प्राचीन दुर्ग – भटनेर (हनुमानगढ़)
– मिट्टी से निर्मित दुर्ग –
1. लोहागढ़ दुर्ग 2. भटनेर दुर्ग
– **राजस्थान का सबसे नवीन दुर्ग –**
1. मोहनगढ़ (जैसलमेर) 2. लोहागढ़ (भरतपुर)
– सर्वाधिक आक्रमण झेलने वाला दुर्ग – तारागढ़ (अजमेर)
– सर्वाधिक विदेशी आक्रमण वाला दुर्ग – भटनेर दुर्ग
– सर्वाधिक गहराई में स्थित दुर्ग – लोहागढ़
– सर्वाधिक बुर्जों वाला किला – सोनारगढ़

सोनारगढ़/जैसलमेर का किला

– जैसलमेर के सोनारगढ़ के नाम से प्रसिद्ध दुर्ग की नींव **जैसल भाटी** ने 1155 ई. में रखी।
– इस दुर्ग का निर्माण शालिवाहन द्वितीय ने पूर्ण करवाया।
– **उपनाम -** सोनगढ़**,** गौहरारगढ़**,** त्रिकूटगढ़ एवं **'**उत्तर भड़ किवाड़**'**।
– **प्रकार -** धान्वन श्रेणी का दुर्ग।
– यह त्रिकुट पहाड़ी पर त्रिभुजाकार आकृति में निर्मित है।
– पीले पत्थरों से निर्मित यह किला **राजस्थान का दूसरा बड़ा आवासीय किला है**।
– सोनारगढ़ दुर्ग का निर्माण **चूने का प्रयोग किए बिना पत्थरों को जोड़कर** किया गया है।
– जैसलमेर दुर्ग विश्व का एकमात्र दुर्ग है जिसकी **छत लकड़ी की** बनी हुई है।
– सोनारगढ़ किले का **प्रवेश द्वार अक्षयपोल** कहलाता है।
– सोनारगढ़ किले के पास ही **गढ़ीसर/घडसीसर झील** स्थित है।

प्रमुख दर्शनीय स्थल-

(1) **99 बुर्ज-** यह दुर्ग **सर्वाधिक बुर्जों वाला (99 बुर्जे)** किला है।
(2) **लक्ष्मीनारायण जी का मन्दिर-** इस दुर्ग का प्रमुख मंदिर **लक्ष्मीनारायण जी का मन्दिर** है, जिसमें जैसलमेर शासकों के आराध्य देव की मूर्ति मेड़ता से लाई गई।
(3) इस दुर्ग का प्राचीन मंदिर **आदिनाथ जी (जैन मंदिर)** का है।
(4) जैसलु कुआँ
(5) कमरकोट (घाघरानुमा परकोटा)
(6) **जिनभद्र सूरी भंडार -** यहाँ प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ रखे हुए है।
(7) **शीश महल -** दुर्ग में महारावल अखैसिंह द्वारा निर्मित सर्वोत्तम विलास।

ढाई साके-:

– जैसलमेर दुर्ग ढाई साकों के लिए प्रसिद्ध है।
– **प्रथम साका -** जैसलमेर का प्रथम साका भाटी शासक **मूलराज द्वितीय और अलाउद्दीन खिलजी** के मध्य 1312 ई. में हुआ, इसमें मूलराज द्वितीय के नेतृत्व में केसरिया हुआ।
– **दूसरा साका -** जैसलमेर का दूसरा साका **रावल दूदा और दिल्ली के फिरोजशाह तुगलक** के मध्य 1370-71 ई. में हुआ।
– **तीसरा अर्द्ध साका** - 1550 ई. में जैसलमेर शासक राव **लूणकरण और कंधार शासक अमीर अली** के मध्य हुआ। इसमें वीरों ने केसरिया तो किया लेकिन जौहर नहीं हुआ, इसलिए इसे अर्द्ध साका कहा।
– **अबुल फजल** ने इस दुर्ग के बारे में कहा कि **"घोड़ा कीजे काठ का पग किजे पाषाण शरीर राखे बखतरबंद ते पहुँचे जैसाण।"**

नोट-

- राजस्थान इतिहास का यह **एकमात्र अर्द्ध साका** हुआ।
- राजस्थान के इस दुर्ग को **यूनेस्को** ने वर्ष 2013 में **विश्व विरासत** में शामिल किया।
- फिल्म निर्देशक **सत्यजीत रे** द्वारा इस दुर्ग पर '**सोनार किला फिल्म**' का निर्माण किया गया।
- दूर से देखने पर यह दुर्ग पहाड़ी पर **"लंगर डाले एक जहाज का आभास"** कराता है।

भटनेर दुर्ग (हनुमानगढ़)

- इस दुर्ग का निर्माण तीसरी सदी के अन्त (298 ई.) में **भूपत भाटी** द्वारा **सरस्वती या घग्घर नदी** के तट पर करवाया गया था।
- इस दुर्ग का अन्य नाम **'उत्तरी सीमा का प्रहरी'** है।
- **वास्तुकार -** कैकेया।
- **श्रेणी -** धान्वन दुर्ग।
- इस दुर्ग में **52** विशाल बुर्ज हैं।
- किले का निर्माण पक्की हुई ईटों और चूने से हुआ था।
- भटनेर दुर्ग राजस्थान का **सबसे प्राचीन दुर्ग** है।
- भटनेर दुर्ग पर **सबसे अधिक विदेशी आक्रमण** हुए।
- 1003 ई. में **महमूद गजनवी** का प्रथम विदेशी आक्रमण हुआ तथा अंतिम विदेशी आक्रमण 1532-34 ई. का **कामरान** का हुआ।
- यह दुर्ग राजस्थान का एकमात्र ऐसा दुर्ग है जहाँ पर **मुस्लिम महिलाओं ने जौहर** किया। यह जौहर 1398 ई. में हुआ था। उस समय भटनेर का शासक **दूलचंद** था और आक्रमण **तैमूर लंग** का हुआ।
- इस जौहर का प्रमाण तैमूर लंग की आत्मकथा **'तुजुक ए तैमुरी'** में मिलता है।
- **1805 ई.** में बीकानेर शासक **सूरतसिंह** ने भटनेर के भाटियों को हराकर इसका नामकरण **हनुमानगढ़** किया।
- इस दुर्ग में बलबन के किलेदार **'शेर खाँ की कब्र'** है।
- भटनेर दुर्ग में एक प्रवेशद्वार पर एक राजा के साथ **6** नारियों की आकृतियाँ बनी हैं।

जूनागढ़ (बीकानेर)

- **निर्माण -** 1589-94 ई. में **रायसिंह** के द्वारा करवाया गया।
- यह किला राती घाटी में **'बीका की टेकरी'** के ऊपर निर्मित दुर्ग है।
- जूनागढ़ का दुर्ग **'धान्वन दुर्ग'** की श्रेणी में आता है।

उपनाम- जमीन का जेवर, लालगढ़, रातीघाटी का किला।

- यह दुर्ग **सूरसागर झील के किनारे** स्थित है।
- **दुर्ग की आकृति -** चतुष्कोण या चतुर्भुजाकृति।

प्रवेश द्वार -:

- **बाहरी -** कर्णपोल एवं चाँदपोल।
- **भीतरी -** दौलतपोल, फतेहपोल, रतनपोल, सूरजपोल एवं ध्रुवपोल।
- सूरज पोल पर **राजा रायसिंह की प्रशस्ति** उत्कीर्ण है। (**प्रशस्ति रचयिता- जैता**)
- **मुख्य द्वार सूरज पोल** पर गजारूढ़ '**जयमल व फत्ता**' की मूर्तियाँ स्थित है, जो मेवाड़ के महाराणा उदयसिंह के सेनापति थे।

दुर्ग के दर्शनीय स्थल :-

(1) अनूप संग्रहालय (2) फूल महल
(3) चन्द्र महल (4) लाल निवास
(5) छत्र महल (6) गंगा निवास महल
(7) दलेल निवास महल (8) रतन निवास महल।
(9) **दुर्ग में दो कुएँ** - रामसर एवं रानीसर।
(10) 33 **करोड़ देवी-देवताओं का मंदिर -** यहाँ सिंह पर सवार गणपति **(**हेरंब गणपति**)** की दुर्लभ प्रतिमा है।
(11) जूनागढ़ के दुर्ग में **नागणेची माता व लक्ष्मीनारायण जी** का मंदिर है। लक्ष्मीनाराय जी का मंदिर जूनागढ़ का आकर्षक मंदिर है, इसका **निर्माण रतनसिंह** ने करवाया।

- राजस्थान में पहली बार लिफ्ट इसी दुर्ग में लगाई थी।
- **जूनागढ़ दुर्ग के सम्बन्ध में दीनानाथ दुबे की उक्ति – 'दीवारों के भी कान होते है पर जूनागढ़ के महलों की दीवारें तो बोलती हैं।'**
- यह दुर्ग वास्तव में आगरा के दुर्ग से मिलता-जुलता है।

मेहरानगढ़ दुर्ग (जोधपुर)

- **निर्माण -**1459 ई. में राव जोधा द्वारा करवाया गया।
- दुर्ग की **नींव करणी माता** (रिद्धि बाई) ने रखी।
- **इस दुर्ग की श्रेणी** – गिरि दुर्ग।
- **अवस्थिति -** पंचेटिया पहाड़ी/चिड़िया टुक पहाड़ी पर स्थित है।
- **उपनाम-** कागमुखीगढ़, मयूरध्वज गढ़, जोधा की ढाणी, सूर्यगढ़, गढ़ चिंतामणि, मारवाड़ का सिरमौर।
- इस दुर्ग की नींव में **राजाराम जी मेघवाल** को जीवित चुना गया।
- **प्रवेश द्वार -**
  (1) जयपोल – उत्तर-पूर्व में मानसिंह द्वारा **1808** ई. में निर्मित।
  (2) फतेहपोल – दक्षिण-पश्चिम में अजीतसिंह द्वारा **1707** ई. में निर्मित।
  (3) **अन्य प्रवेश द्वार** - ध्रुव पोल, सुरज पोल, इमरत पोल तथा भैरों पोल।
- **मेहरानगढ़ की मुख्य तोपें -** किलकिला, गजनी, शम्भूबाण, गजक, गुब्बार जनजमा, कड़क, बिजली आदि।
- मेहरानगढ़ दुर्ग में पेयजल स्रोतों में **रानीसर तथा पदमसर** तालाब है।

प्रमुख दर्शनीय स्थल-:

प्रमुख महल- दुर्ग के भीतर फ़तेह महल, फूल महल, शृंगार चंवरी महल, मोती महल स्थित हैं। इनमें फूल महल (अभयसिंह द्वारा निर्मित) मेहरानगढ़ का सबसे आकर्षक महल है।

मंदिर:

(1) **चामुण्डा माता का मंदिर-** मेहरानगढ़ दुर्ग में राठौड़ राजवंश की आराध्य देवी **चामुण्डा माता का मंदिर** है, जिसका निर्माण **राव जोधा** द्वारा करवाया गया। 2008 **वर्ष में चामुण्डा मंदिर में भगदड़ मच जाने से कई लोग मारे गये इसकी जाँच हेतु जसराज चोपड़ा कमेटी का गठन किया गया।**
(2) **मुरली मनोहर मंदिर**
(3) **आनंदघनजी मंदिर**
(4) **राठौड़ों की कुलदेवी नागणेची जी का मंदिर**

राजस्थान का इतिहास

राजस्थान के इतिहास के स्त्रोत 01

राजस्थान के इतिहास का परिचय

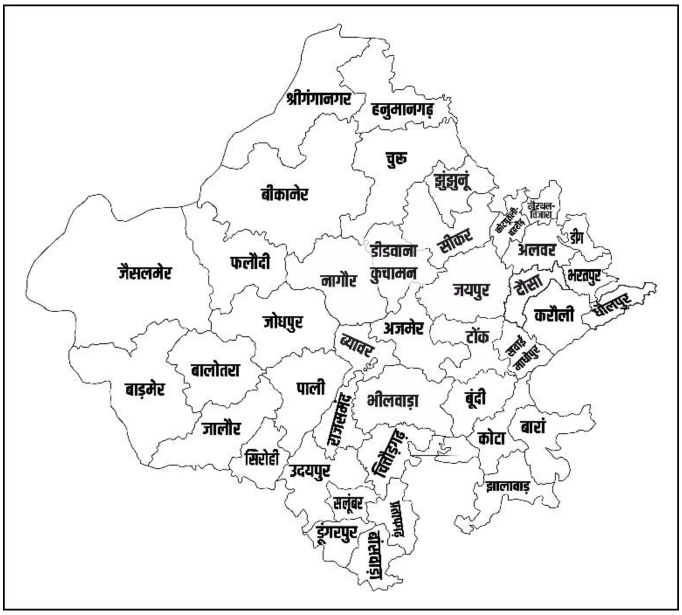

- **वर्ष 1949** से पहले **"राजस्थान"** नाम की कोई भौगोलिक इकाई अस्तित्व में नहीं थी।
- **वर्ष 1800** में **जॉर्ज थॉमस** ने इस भू-भाग के लिए **"राजपूताना"** शब्द का प्रयोग किया।
- **वर्ष 1829** में **कर्नल जेम्स टॉड** ने अपनी पुस्तक **"एनल्स एण्ड एण्टीक्वीटीज ऑफ राजस्थान"** में इसे **"रायथान"** या **"राजस्थान"** नाम दिया।
- स्वतंत्रता के बाद जब विभिन्न रियासतों का एकीकरण हुआ, तो **30 मार्च, 1949** को इस क्षेत्र का नाम **"राजस्थान"** रखा गया। राजस्थान का नामकरण विभिन्न राजवंशों और उनकी परंपराओं के साथ-साथ क्षेत्र की ऐतिहासिक पहचान को भी समेटता है।

प्राचीनतम नाम और उनके विवरण-

- **मरु और धन्व-** जोधपुर संभाग के मरुस्थल के लिए प्रयुक्त होते थे। जोधपुर को पहले **"मरू" और "मरूवार"** कहा जाता था और बाद में इसे "मारवाड़" कहा गया।
- **जांगल-** इस नाम का प्रयोग उन क्षेत्रों के लिए किया गया, जहां शमी, कैर या पीलू होते थे। बीकानेर और नागौर का क्षेत्र "जांगल देश" कहलाता था।

भौगोलिक विशेषताओं के आधार पर नामित क्षेत्र-

- **कांठल-** माही नदी के किनारे स्थित प्रतापगढ़ का भू-भाग।
- **छप्पन का मैदान-** प्रतापगढ़-बाँसवाड़ा के मध्य, जहां 56 गाँवों का समूह था।
- **ऊपरमाल-** भैंसरोडगढ़ से बिजौलिया तक का पठारी क्षेत्र।
- **गिरवा-** उदयपुर के आस-पास का पहाड़ी क्षेत्र।

अन्य प्राचीन नाम-

- **माँड-** जैसलमेर का प्राचीन नाम।
- **बागड़-** डूंगरपुर और बाँसवाड़ा का क्षेत्र।
- **हाड़ौती-** कोटा और बूंदी के त्रिकोण का प्रदेश।
- **शेखावाटी-** सीकर, झुंझुनूं और चूरू का क्षेत्र।

राजस्थान के प्रमुख शिलालेख

- उत्कीर्ण अभिलेखों के अध्ययन को 'एपीग्राफी' (पुरालेखशास्त्र) कहा जाता है।
- अभिलेखों एवं दूसरे पुराने दस्तावेजों की प्राचीन लिपि का अध्ययन 'पेलियोग्राफी' (पुरालिपिशास्त्र) कहलाता है।
- भारतीय लिपियों पर पहला वैज्ञानिक अध्ययन डॉ. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने किया। श्री ओझा ने भारतीय लिपियों पर 'भारतीय प्राचीन लिपिमाता' पुस्तक की रचना की।
- **शिलालेख/अभिलेख -** शिलालेख या अभिलेख वे लिखित सामग्री होती है, जो पत्थर की शिलाओं, दीवारों, स्तम्भों आदि पर अंकित होती है।
- **प्रशस्ति -** जब किसी शिलालेख में किसी शासक की उपलब्धियों और उनकी महानता का बखान किया जाता है, तो उसे प्रशस्ति कहा जाता है।
- **भारत में संस्कृत भाषा का प्रथम अभिलेख-** शक शासक रूद्रदामन का 'जूनागढ़ अभिलेख' (गुजरात)।

नांदसा यूप-स्तम्भ लेख (225 ई.)

- भीलवाड़ा जिले में स्थित इस यूप-स्तम्भ की स्थापना 225 ई. में की गई थी। इस लेख से पता चलता है कि शक्तिगुणगुरु नामक व्यक्ति ने यहाँ षष्ठिरात्र (छः रातों में सम्पन्न) यज्ञ किया था। इस स्तम्भ की स्थापना पश्चिमी (शक) क्षत्रपों के राज्य-काल में सोम द्वारा की गई थी।

घोसुण्डी शिलालेख (द्वितीय शताब्दी ई.पू.)

- यह शिलालेख चित्तौड़ से सात मील दूर घोसुण्डी गाँव से प्राप्त हुआ था। इस लेख की भाषा संस्कृत है और लिपि ब्राह्मी है।
- इस लेख में उल्लेख है कि गजवंश के पाराशरी के पुत्र सर्वतात ने यहाँ अश्वमेध यज्ञ किया था। शिलालेख में द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व में भागवत धर्म का प्रचार, संकर्षण तथा वासुदेव की मान्यता और अश्वमेध यज्ञ के प्रचलन का वर्णन मिलता है।
- घोसुण्डी शिलालेख को सर्वप्रथम डॉ. भंडारकर ने पढ़ा था।
- वर्तमान में यह शिलालेख उदयपुर संग्रहालय में सुरक्षित है।

बड़वा यूप-स्तम्भ लेख (238-39 ई.)

- यह लेख बारां जिले के बड़वा नामक स्थान से प्राप्त कुल 3 यूप स्तम्भों में से एक पर उत्कीर्ण है। इस लेख में मौखरी वंश के शासकों का सर्वप्रथम उल्लेख किया गया है।
- इसमें त्रिरात्र यज्ञों का उल्लेख है, जिन्हें मौखरी महासेनापति बल के तीन पुत्रों — बलवर्धन, सोमदेव और बलसिंह ने संपन्न किया था। इस शिलालेख की भाषा संस्कृत व लिपि ब्राह्मी है।

बड़ली गाँव का शिलालेख (443 ई. पूर्व)

- यह शिलालेख अजमेर जिले के **बड़ली गाँव के भिलोत माता मंदिर** से एक स्तम्भ के टुकड़े के रूप में प्राप्त हुआ।
- यह राजस्थान का सबसे **प्राचीन शिलालेख** है।
- शिलालेख की **लिपि ब्राह्मी** है। यह शिलालेख खंडित अवस्था में 1912 ई. में डॉ. जी. एच. ओझा को प्राप्त हुआ था।
- वर्तमान में यह शिलालेख अजमेर संग्रहालय में रखा गया है।

भाब्रू शिलालेख

- यह शिलालेख **1837 ई. में कैप्टन बर्ट** को बीजक की पहाड़ी (बैराठ) से प्राप्त हुआ था।
- इस शिलालेख की **भाषा प्राकृत और लिपि ब्राह्मी** है।
- इस अभिलेख में सम्राट अशोक ने बुद्ध धर्म और संघ में आस्था व्यक्त की है। यह शिलालेख अशोक के बौद्ध धर्म के अनुयायी होने का प्रमाण प्रदान करता है।

बैराठ शिलालेख

- यह शिलालेख बैराठ के पास **भीम डूंगरी की तलहटी** में एक चट्टान पर उत्कीर्ण है।
- इस शिलालेख की खोज **1871-72 ई.** में पुरातत्त्ववेत्ता **कार्लाइल** ने की थी। शिलालेख की भाषा प्राकृत और लिपि ब्राह्मी है।

नगरी का लेख (200-150 ई.पू.)

- यह शिलालेख डॉ. ओझा को नगरी (चित्तौड़गढ़) नामक स्थान पर प्राप्त हुआ था। डॉ. ओझा ने इस लेख को उदयपुर संग्रहालय में रखा। इसकी लिपि घोसुण्डी के लेख की लिपि से मिलती-जुलती है।

नगरी का शिलालेख (424 ई.)

- यह शिलालेख डी. आर. भंडारकर को नगरी (चित्तौड़गढ़) के उत्खनन के दौरान प्राप्त हुआ था।
- वर्तमान में यह शिलालेख अजमेर संग्रहालय में सुरक्षित है।
- शिलालेख की **भाषा संस्कृत** और **लिपि नागरी** है।

बसन्तगढ़ का लेख (625 ई.)

- यह शिलालेख सिरोही जिले के बसन्तगढ़ से वि.सं. 682 का प्राप्त हुआ है, जो चावड़ा वंश के शासक वर्मलात के समय का है।
- इस लेख से यह ज्ञात होता है कि वर्मलात उस समय अर्बुद देश का स्वामी था। इस लेख में सामन्त प्रथा का भी उल्लेख मिलता है। वर्तमान में यह शिलालेख राजकीय म्यूजियम, अजमेर में रखा गया है।

सांमोली शिलालेख (646 ई.)

- उदयपुर जिले के सांमोली ग्राम से प्राप्त यह लेख गुहिल वंश के शासक शिलादित्य के समय का है। मेवाड़ के गुहिल वंश के समय को निश्चित करने तथा उस समय की आर्थिक और साहित्यिक स्थिति की जानकारी के लिए यह लेख विशेष महत्त्वपूर्ण है।

अपराजित का शिलालेख (661 ई.)

- यह शिलालेख **नागदा गाँव** के पास स्थित **कुंडेश्वर के मंदिर** में **डॉ. ओझा** को प्राप्त हुआ था।
- डॉ. ओझा ने इसे उदयपुर के **विक्टोरिया हॉल संग्रहालय** में रखवाया। गुहिल शासक अपराजित ने शक्तिशाली वराहसिंह को परास्त कर उसे अपने अधीन किया और बाद में उसे अपना सेनापति नियुक्त किया।

मंडोर का शिलालेख (685 ई.)

- यह शिलालेख मंडोर (जोधपुर) की एक बावड़ी में आयताकार शिला पर उत्कीर्ण है।
- इसमें विष्णु तथा शिव की पूजा का उल्लेख है।

  नोट: मंडोर का दूसरा शिलालेख 837 ई. में गुर्जर प्रतिहार शासक बाउक द्वारा खुदवाया गया था।

मानमोरी का शिलालेख- (713 ई.)

- यह शिलालेख चित्तौड़ के पास पूठोली गाँव में मानसरोवर झील के तट पर स्थित एक स्तम्भ पर उत्कीर्ण था।
- कर्नल जेम्स टॉड को यह शिलालेख मिला था, लेकिन इसे इंग्लैंड ले जाते समय भारी होने के कारण उन्होंने इसे समुद्र में फेंक दिया। इस शिलालेख में अमृत मंथन की कथा का उल्लेख किया गया है और इसके बाद चार राजाओं महेश्वर, भीम, भोज और मान का वर्णन है।
- इसमें भोज के पुत्र मान (मोरी वंश) द्वारा मानसरोवर झील के निर्माण का भी उल्लेख है।

कणसवा का शिलालेख (738 ई.)

- यह शिलालेख कोटा के कणसवा गाँव के शिवालय में लगा हुआ है। इसमें धवल नामक एक मौर्यवंशी राजा का उल्लेख है।
- इस उल्लेख के बाद राजस्थान में अन्य किसी मौर्यवंशी राजा का वर्णन नहीं मिलता है।

राजस्थान की राजव्यवस्था

राज्यपाल

राज्यपाल से संबंधित प्रमुख अनुच्छेद

अनुच्छेद	विवरण
153	राज्यों के राज्यपाल
154	राज्य की कार्यकारी शक्ति
155	राज्यपाल की नियुक्ति
156	राज्यपाल के पद की पदावधि
157	राज्यपाल के रूप में नियुक्ति के लिए योग्यताएँ
158	राज्यपाल कार्यालय की शर्तें
159	राज्यपाल द्वारा शपथ या प्रतिज्ञान
160	कतिपय आकस्मिकताओं में राज्यपाल के कार्यों का निर्वहन
161	क्षमा आदि देने की राज्यपाल की शक्ति
162	राज्य की कार्यकारी शक्ति का विस्तार
163	राज्यपाल को सहायता और सलाह देने के लिए मंत्रिपरिषद्
164	मंत्रियों से संबंधित अन्य प्रावधान जैसे नियुक्तियाँ, कार्यकाल, वेतन और अन्य
165	राज्य के महाधिवक्ता
166	किसी राज्य की सरकार के कामकाज का संचालन
167	राज्यपाल को सूचना प्रस्तुत करने आदि के संबंध में मुख्यमंत्री के कर्तव्य
174	राज्य विधानमंडल के सत्र, सत्रावसान और विघटन
175	राज्य विधानमण्डल के सदनों को सम्बोधित करने और संदेश भेजने के राज्यपाल के अधिकार।
176	राज्य विधानमण्डल के सदनों में राज्यपाल व विशेष अभिभाषण।
200	विधेयकों पर सहमति (अर्थात् राज्य विधानमंडल द्वारा पारित विधेयकों पर राज्यपाल की सहमति)
201	राज्यपाल द्वारा राष्ट्रपति के विचार हेतु आरक्षित विधेयक
213	अध्यादेश प्रख्यापित करने की राज्यपाल की शक्ति
217	उच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों की नियुक्ति के मामले में राष्ट्रपति द्वारा राज्यपाल से परामर्श किया जाना।
233	राज्यपाल द्वारा जिला न्यायाधीशों की नियुक्ति
234	राज्यपाल द्वारा राज्य की न्यायिक सेवा में व्यक्तियों (जिला न्यायाधीशों के अलावा) की नियुक्ति।

राज्य का राज्यपाल

- **अनुच्छेद 153** – प्रत्येक राज्य के लिए एक राज्यपाल होगा; एक व्यक्ति दो या अधिक राज्यों का राज्यपाल हो सकता है (7वां संविधान संशोधन, 1956)।
- **अनुच्छेद 155** – राज्यपाल की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा होती है (मुहर लगे आदेश से)।
- **SC निर्णय (1979)** – राज्यपाल का पद केंद्र के अधीन रोजगार नहीं, बल्कि स्वतंत्र संवैधानिक पद है।

अनुच्छेद 157 – राज्यपाल हेतु अर्हताएँ:
- भारत का नागरिक हो।
- न्यूनतम आयु 35 वर्ष।

दो परंपराएँ (कुछ अपवादों के साथ):
- राज्यपाल उस राज्य का निवासी न हो।
- नियुक्ति में मुख्यमंत्री से परामर्श लिया जाए।

अनुच्छेद 158 – पद की शर्तें:
- सांसद या विधायक नहीं होना चाहिए।
- किसी लाभ के पद पर नहीं होना चाहिए।
- वेतन-भत्ते संसद द्वारा निर्धारित होंगे और कार्यकाल में कम नहीं किए जा सकते।
- दो या अधिक राज्यों के राज्यपाल होने पर भत्ते राष्ट्रपति द्वारा निर्धारित होंगे।

शपथ / प्रतिज्ञान (अनुच्छेद 159)
- शपथ में संविधान, राज्य की सुरक्षा व जनहित की रक्षा का संकल्प।
- शपथ दिलाने वाला – उच्च न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश; अनुपस्थित हो तो वरिष्ठ न्यायाधीश।

विशेषाधिकार एवं उन्मुक्तियाँ (अनुच्छेद 361)
- शासकीय कृत्यों के लिए विधिक उत्तरदायित्व से उन्मुक्ति।
- पद पर रहते आपराधिक कार्यवाही नहीं हो सकती, न ही गिरफ्तारी।
- व्यक्तिगत कार्यों के लिए सिविल मामला चल सकता है (2 माह पूर्व नोटिस आवश्यक)।

कार्यकाल (अनुच्छेद 156)
- सामान्य कार्यकाल: 5 वर्ष, लेकिन राष्ट्रपति के प्रसादपर्यन्त पद पर बने रहते हैं।
- स्थानांतरण व पुनः नियुक्ति संभव।
- उत्तराधिकारी के कार्यभार संभालने तक पद पर बने रहते हैं।
- त्याग-पत्र राष्ट्रपति को दिया जाता है।
- आकस्मिक मृत्यु पर उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश को कार्यभार सौंपा जाता है।

वेतन एवं भत्ते
- संसद द्वारा निर्धारित, भुगतान राज्य की संचित निधि से।
- उल्लेख – संविधान की दूसरी अनुसूची में।
- 2012 में वेतन ₹3.5 लाख प्रतिमाह किया गया।

कार्यकारी शक्तियाँ
- अनुच्छेद 154 के अनुसार राज्य की कार्यपालिका शक्ति राज्यपाल में निहित।
- राज्यपाल राज्य सरकार के सभी कार्य औपचारिक रूप से अपने नाम से करता है।
- मुख्यमंत्री, मंत्रियों, महाधिवक्ता, राज्य निर्वाचन आयुक्त, लोक सेवा आयोग अध्यक्ष/सदस्य की नियुक्ति करता है।
- विश्वविद्यालयों के कुलपतियों की नियुक्ति करता है।
- राज्यपाल राष्ट्रपति से राष्ट्रपति शासन की सिफारिश कर सकता है।

विधायी शक्तियाँ

- राज्य विधानसभा का अभिन्न अंग; सत्र को आहूत या सत्रावसान और विघटित कर सकता है।
- सत्र के पहले दिन व चुनाव पश्चात् पहला सत्र संबोधित करता है।
- विधान परिषद में 1/6 सदस्यों को नामित कर सकता है।
- अध्यादेश (अनु. 213) जारी करने की शक्ति – सत्र न होने पर 6 सप्ताह तक प्रभावी।
- विधेयकों को स्वीकारना, रोकना, पुनर्विचार हेतु लौटाना या राष्ट्रपति के पास भेजना।

वित्तीय शक्तियाँ

- संचित निधि पर नियंत्रण – बिना अनुमति खर्च/जमा नहीं हो सकता।
- बजट विधानसभा में प्रस्तुत कराना सुनिश्चित करता है।
- धन विधेयक केवल राज्यपाल की अनुशंसा पर प्रस्तुत किया जा सकता है।
- आकस्मिक व्यय हेतु आकस्मिक निधि से अग्रिम ले सकता है।
- प्रत्येक 5 वर्ष में वित्त आयोग का गठन करता है।

न्यायिक शक्तियाँ

- जिला न्यायाधीशों की नियुक्ति/स्थानांतरण करता है (अनु. 233)।
- उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की नियुक्ति में परामर्श करता है (अनु. 217)।
- अनु. 234 के अनुसार अन्य न्यायिक अधिकारियों की नियुक्ति करता है।
- न्यायाधीशों को शपथ दिलाता है।

क्षमा की शक्ति (अनु. 161)

- राज्य कानून के अंतर्गत अपराधों की सजा माफ, निलंबित या कम कर सकता है।

स्वविवेकीय शक्तियाँ (अनु. 163)

- राष्ट्रपति शासन की सिफारिश, विधेयक को राष्ट्रपति के पास भेजना, बहुमत न मिलने पर मुख्यमंत्री की नियुक्ति आदि मामलों में विवेकाधिकार।
- असम, मिजोरम, त्रिपुरा आदि राज्यों में जनजातीय परिषदों के वित्तीय मसलों पर विशेष अधिकार।

राष्ट्रपति शासन के दौरान राजस्थान में राज्यपाल

क्र.	अवधि	अवधि (दिन)	राज्यपाल
1	13 मार्च – 26 अप्रैल 1967	44 दिन	डॉ. सम्पूर्णानंद, सरदार हुकुम सिंह
2	30 अप्रैल – 21 जून 1977	52 दिन	वेदपाल त्यागी, रघुकुल तिलक
3	17 फरवरी – 5 जून 1980	109 दिन	रघुकुल तिलक
4	15 दिसंबर 1992 – 3 दिसंबर 1993	353 दिन	डॉ. एम. चेन्ना रेड्डी, धनिकलाल मंडल (प्रभारी), बलिराम भगत

पद पर रहते हुए राज्यपालों की मृत्यु

क्रम	नाम	वर्ष
1	दरबारा सिंह	1998
2	निर्मल चन्द जैन	2003
3	एस. के. सिंह	2009
4	श्रीमती प्रभा राव	2010

राजस्थान की महिला राज्यपाल

नाम	कार्यकाल	विशेष जानकारी
श्रीमती प्रतिभा पाटिल	08-11-2004 से 23-06-2007	प्रथम महिला राज्यपाल, पद से त्याग-पत्र देने वाली प्रथम महिला
श्रीमती प्रभा राव	03-12-2009 से 24-01-2010 (अतिरिक्त प्रभार) 25-01-2010 से 26-04-2010	कार्यकाल के दौरान मृत्यु, HP की राज्यपाल के रूप में अतिरिक्त प्रभार
श्रीमती मार्गरेट अल्वा	12-05-2012 से 07-08-2014	—

राजस्थान के संदर्भ में राज्यपाल

- राजस्थान में 30 मार्च, 1949 से 31 अक्टूबर, 1956 तक राज्य में राजप्रमुख का पद था। इस पद पर जयपुर के महाराजा सवाई मानसिंह द्वितीय नियुक्त थे। सवाई मानसिंह द्वितीय राजस्थान के पहले व एकमात्र राजप्रमुख थे।
- राजस्थान में 1 नवम्बर, 1956 को राज्य के पुनर्गठन के बाद राजप्रमुख का पद समाप्त करके राज्यपाल का पद सृजित किया गया।
- राज्य के प्रथम राज्यपाल सरदार गुरुमुख निहालसिंह बने।

अभ्यास प्रश्न

1. राजस्थान में राज्य प्रशासन के विधितः प्रमुख हैं-

(a) राज्य के राज्यपाल
(b) राज्य के महाधिवक्ता
(c) संभागीय आयुक्त
(d) राज्य के मुख्यमंत्री

2. भारतीय संविधान का कौन-सा अनुच्छेद उपबंध करता है, 'प्रत्येक राज्य के लिए एक राज्यपाल होगा'?

(a) अनुच्छेद 154
(b) अनुच्छेद 155
(c) अनुच्छेद 153
(d) अनुच्छेद 164

3. राजस्थान में आखिरी बार जब राष्ट्रपति शासन लगाया गया, तब राज्यपाल कौन थे?

(a) वसंतराव पाटिल
(b) एम. चेन्ना रेड्डी
(c) रघुकुल तिलक
(d) देवी प्रसाद चट्टोपाध्याय

राजस्थान की अर्थव्यवस्था

- राजस्थान में ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग की स्थापना 1 अप्रैल, 1999 को की गई थी।
- यह विभाग राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों के समग्र विकास हेतु कार्य करता है।
- विभाग द्वारा ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज संस्थान के माध्यम से विभिन्न योजनाएं एवं कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं।
- इन योजनाओं का मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित है:

1. ग्रामीण गरीबी में कमी लाना,
2. आधारभूत ढांचे (सड़क, बिजली, पानी आदि) का विकास करना,
3. मजदूरी आधारित रोजगार एवं स्वरोजगार के अवसर सृजित करना,
4. क्षेत्रीय असंतुलन को समाप्त कर समावेशी ग्रामीण विकास सुनिश्चित करना,
5. ग्रामीण आवास की स्थिति में सुधार लाना।

राजस्थान ग्रामीण आजीविका विकास परिषद (राजीविका)

- इसकी स्थापना ग्रामीण विकास विभाग के प्रशासनिक नियंत्रण में अक्टूबर, 2010 में एक स्वायत्त परिषद के रुप में की गई है।
- **अध्यक्ष -** मुख्यमंत्री
- **प्रमुख सचिव**, (राजस्थान सरकार), सशक्त समिति के अध्यक्ष हैं।
- राज्य की ब्रांड एंबेसडर: रुमा देवी
- **अधिदेश -** स्वयं सहायता समूह (एस.एच.जी.) आधारित संस्थागत संरचना से जुड़े सभी ग्रामीण आजीविका कार्यक्रमों को कार्यान्वित करना।

इसका प्रमुख उद्देश्य

- स्वयं सहायता समूह (एस.एच.जी.) आधारित संस्थागत संरचना से जुड़े सभी ग्रामीण आजीविका कार्यक्रमों को लागू करना।
- स्वयं सहायता समूहों, उत्पादक संगठनों, सामुदायिक विकास संगठनों, स्वयं सहायता समूहों के महासंघों के गठन और सुदृढ़ीकरण में सहायता करना।
- सामाजिक-आर्थिक जाति जनगणना (एस.ई.सी.सी.) सर्वे द्वारा चिह्नित ग्रामीण निर्धनों के लिए स्थायी आजीविका संवर्द्धन हेतु स्थाई वित्तीय और प्रभावी संस्थागत आधार सृजित करना।
- वित्तीय एवं चयनित सेवाओं तक पहुंच में सुधार लाना; तेजी से बदलती बाह्य सामाजिक-आर्थिक एवं राजनीतिक दुनिया से निपटने के लिए अपनी क्षमता का निर्माण करना।
- राजीविका द्वारा निम्न योजनाएं चलाई जा रही हैं-

1. राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (NRLM), 2011

- ग्रामीण परिवारों को स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से संगठित करना।
- इस योजना को ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा पूरे राज्य में लागू किया गया हैं।

राष्ट्रीय ग्रामीण आर्थिक परिवर्तन परियोजना

- इस योजना का आरम्भ 19 फरवरी, 2019 को हुआ।
- यह कार्यक्रम राजीविका के माध्यम से राज्य के 9 जिलों में क्रियान्वित ।
- वित्त पोषण विश्व बैंक द्वारा

पश्चिमी राजस्थान में गरीबी उन्मूलन

- इस परियोजना का समग्र लक्ष्य गरीबों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाना तथा कमजोर और वंचित समूहों के लिए स्थायी आजीविका के अवसर पैदा करना है।

एक ब्लॉक एक उत्पाद

- "एक ब्लॉक एक उत्पाद" को राजस्थान के 150 ब्लॉकों में उद्यमों के लिए क्षेत्र विशेष और आवश्यकता आधारित सहायता प्रदान करके ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं को मजबूत करने के लिए एक परियोजना के रुप में देखा गया है जो राजीविका का एक फूटप्रिंट है।

उपलब्धियाँ

- सुरक्षा सखी के रुप में 3.42 लाख स्वयं सहायता समूह की महिलाएं पंजीकृत हैं।

राजस्थान महिला निधि क्रेडिट को-ऑपरेटिव फेडरेशन लिमिटेड

- स्वयं सहायता समूहों की सदस्यों को दैनिक जरुरतों और
- स्वरोजगार के लिए महिलाओं को आर्थिक रुप से सशक्त बनाने के लिए आसानी से ऋण उपलब्ध कराना।
- **वन धन विकास केंद्र-**
- वन धन विकास योजना के तहत जिलों (बारां, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, झालावाड़, सिरोही, प्रतापगढ़, कोटा और उदयपुर) में गठित ।
- उजाला दुग्ध उत्पादक कंपनी लिमिटेड कोटा, बूंदी, करौली, सवाई माधोपुर, बारां एवं झालावाड जिलों में दुग्ध उत्पादकों को बढ़ावा देने के लिए गठन किया गया।
- **हाड़ौती महिला किसान प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड-** कोटा और बारां जिले में सोयाबीन और धनिया मूल्य श्रृंखला विकसित करना।
- **लखपति दीदी योजना-** इसके तहत वित्तीय सहायता प्रदान करके महिलाओं का उत्थान करना, उद्यमशीलता को बढ़ावा देना और राज्य में महिलाओं की वित्तीय स्थिति में सुधार करना है। अभी तक कुल 5.25 लाख महिलाओं को प्रशिक्षण दिया चुका हैं।

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (MGNREGS)

- उद्देश्य-ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका सुरक्षा में वृद्धि के लिए ऐसे प्रत्येक परिवार को एक वित्तीय वर्ष में कम से कम 100 दिनों का सुनिश्चित रोजगार उपलब्ध करवाना, जिसके वयस्क सदस्य अकुशल शारीरिक श्रम करने हेतु स्वेच्छा से सहमत है।

मुख्य विशेषताएँ-

- ग्राम पंचायत के सभी स्थानीय वयस्क निवासी इस योजना के तहत पंजीकरण के लिए पात्र हैं।
- न्यूनतम एक तिहाई लाभार्थी महिलाओं को चुना जाता है।
- आवेदन के 15 दिनों के भीतर रोजगार प्रदान करने की गारंटी है, यदि रोजगार नहीं दिया गया तो राज्य सरकार द्वारा बेरोजगारी भत्ता प्रदान किया जाता है।
- कार्य गाँव के 5 किलोमीटर के दायरे में प्रदान किया जाता है।
- 5 किलोमीटर से अधिक की दूरी पर 10% अतिरिक्त मजदूरी देय होती है।
- कार्यस्थल पर पेयजल, छाया, प्राथमिक चिकित्सा और क्रेच सुविधाएँ अनिवार्य हैं।
- 60:40 का मजदूरी और सामग्री अनुपात बनाए रखना होता है (अर्थात् मजदूरी- 60%, सामग्री - 40%)।
- एक प्रभावी शिकायत निवारण तंत्र मौजूद है।
- सरकार ने 100 दिनों से अधिक की अतिरिक्त रोजगार प्रदान करने की अनुमति दी है, जो सूखा प्रभावित जिलों में प्रति परिवार 150 दिनों तक हो सकता है।

ग्राम सभा

- कार्यों के चयन एवं वार्षिक कार्य योजना तैयार किए जाने हेतु मुख्य रुप से अधिकृत हैं।
- ग्राम सभा द्वारा सामाजिक अंकेक्षण किया जाता हैं।
- सभी प्रकार की मजदूरी का भुगतान केवल बैंकों/डाकघरों के माध्यम से।
- किसी भी ठेकेदार और श्रम विस्थापित मशीनरी से कार्य की अनुमति नहीं है।

मुख्यमंत्री ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (CMREGS):

- महात्मा गांधी नरेगा योजना के तहत 100 दिन का रोजगार पूरा करने के बाद 25 दिन का अतिरिक्त रोजगार प्रदान किया जाता है।
- 100 दिन का अतिरिक्त रोजगार प्रदान कराया जाता है:-

1. बारां जिले में रहने वाले सहरिया और खैरुआ आदिवासी परिवार,
2. उदयपुर जिले में निवास करने वाले "कठौड़ी" जनजाति परिवार,
3. राज्य के विशेष योग्यजन श्रमिक

मिशन अमृत सरोवर

- **उद्देश्य -** 1. देश के प्रत्येक जिले में न्यूनतम 75 अमृत सरोवरों (तालाबों) का निर्माण/विकास करना है।
  2. सरोवर में लगभग 10000 क्यूबिक मीटर की जल धारण क्षमता के साथ न्यूनतम 1 - 1 एकड़ (0.4 हेक्टेयर) का तालाब क्षेत्र होगा।

प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण

- शुरुआत 1 अप्रैल, 2016 को हुई।
- प्रत्येक लाभार्थी को आवास निर्माण के लिए ₹ 1,20,000 की वित्तीय सहायता प्रदान करना।
- केंद्र प्रायोजित योजना-केंद्रीय राज्य अनुपात - 60:40
- स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत शौचालय निर्माण के लिए प्रत्येक लाभार्थी को ₹ 12,000 की अतिरिक्त राशि भी प्रदान की जाती है।
- इस योजना के लाभार्थियों को मनरेगा के माध्यम से दैनिक मजदूरी (90 मानव दिवस तक) देय है।
- योजना के अंतर्गत लाभार्थियों का चयन सामाजिक आर्थिक जाति जनगणना-2011 (एस.ई.सी.सी.-2011) के आंकड़ों के आधार पर किया जाता है।

विधायक स्थानीय क्षेत्र विकास योजना (MLALAD)

- **उद्देश्य-** स्थानीय आवश्यकतानुसार आधारभूत संरचना, जनोपयोगी परिसंपत्तियों का निर्माण करना और विकास में क्षेत्रीय असंतुलन को दूर करना हैं।
- यह योजना ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में क्रियान्वित की जा रही है।

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों से संबंधित कार्य	निर्वाचन क्षेत्र के लिए राशि	एससी/एसटी बस्तियों के लिए
पेयजल, सड़कें, आबादी क्षेत्र में जल निकासी प्रणाली, शहरी क्षेत्र में सीवरेज कार्य, राजकीय शैक्षणिक संस्थानों में भवन निर्माण कार्य, पानी के टैंकों की सफाई, पर्यटन क्षेत्रों का आधारभूत विकास आदि।	₹5 करोड़ प्रति वर्ष	कुल वार्षिक आवंटित राशि का कम से कम 20%

- सार्वजनिक उपयोगिताओं के मरम्मत और नवीनीकरण कार्यों के लिए विधायकों द्वारा वार्षिक आवंटन का 20% तक सिफारिश किया जा सकती है।

सांसद स्थानीय क्षेत्र विकास योजना (MPLAD)

- **उद्देश्यः** सामाजिक एवं आधारभूत सुविधाओं तथा जनोपयोगी परिसंपत्तियों (व्यापक सार्वजनिक उपयोग के लिए) का सृजन करना
- यह सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय द्वारा संचालित है।
- राजस्थान में 25 लोकसभा और 10 राज्यसभा सदस्य हैं।

सांसद	प्रति वर्ष राशि	निधि के लिए उपयोग क्षेत्र
लोक सभा सांसद	₹5 करोड़	अपने निर्वाचन क्षेत्र के भीतर अनुशंसा कर सकते हैं।
राज्य सभा सांसद	₹5 करोड़	प्रतिनिधित्व वाले राज्य के किसी भी जिले में अनुशंसा कर सकते हैं।
राज्यसभा के मनोनीत सांसद	₹5 करोड़	देश में कहीं भी कार्य करने की अनुशंसा कर सकते हैं।
MPLAD का 15%- अनुसूचित जाति (एस.सी.) आबादी वाले क्षेत्रों के लिए MPLAD का 7.5% - अनुसूचित जनजाति (एस.टी) आबादी वाले क्षेत्रों के लिए		

हिन्दी

– हिन्दी **अरबी/**फ़ारसी/पारसी/ईरानी भाषा का शब्द है।
– सिन्धु नदी के पश्चिमी भाग में रहने वाले लोग 'स' को 'ह' उच्चारित करते थे और 'ध' को 'द' बोलते थे।
इस प्रकार ईरानी लोग सिन्धु नदी को 'हिन्दु' नदी कहते थे, सिंधु नदी के पूर्व में रहने वाले भारतीय लोगों को हिन्दू कहते थे। आर्यों की भाषा हिन्दी कहलायी तथा सिन्धु नदी के पूर्व का भाग हिन्दुस्तान (सिन्धु + स्थान) कहलाया।
सिन्धु - हिन्दु - हिन्दू - हिन्दी - हिन्दुस्तान
– भारतीय आर्यभाषाओं के इतिहास को तीन कालों खंडों में बाँटा गया है–
(1) प्राचीन भारतीय आर्य भाषा - 1500 ई. पू. - 500 ई.पू. तक
(2) मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा - 500 ई. पू. - 1000 ई. तक
(3) आधुनिक भारतीय आर्य भाषा - 1000 ई. - वर्तमान समय

संस्कृत
1. वैदिक संस्कृत (वेद, उपनिषद्) – 1500 ई. पू. - 1000 ई.पू.
2. लौकिक संस्कृत (रामायण, महाभारत) – 1000 ई.पू.- 500 ई.पू.
– **पालि** (बौद्ध ग्रंथ) - 500 ई.पू. - 1 ई.
– **प्राकृत** (जैन ग्रंथ) - 1 ई. - 500 ई.
– **अपभ्रंश** (शौरसेनी) - 500 ई. - 1000 ई.
– **हिन्दी** - 1000 ई. - वर्तमान समय
– हिन्दी का मानक समय - 1100 ई.

भाषा
– [भाष् (प्रकट करना) - संस्कृत]
– मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, वह अपने मन के भाव और विचारों को प्रकट करने के लिए जिस माध्यम का प्रयोग करता है, उसे 'भाषा' कहते हैं।
विशेष– **मातृ भाषा दिवस** / राजस्थानी भाषा दिवस - **21 फरवरी**

राष्ट्रीय हिन्दी भाषा दिवस - 14 सितंबर
– **14 सितम्बर 1949 को हिंदी को राजभाषा के रूप में शामिल किया। इसी कारण 1953 से 14 सितम्बर को राष्ट्रीय हिंदी दिवस मनाया जाता है।**
– संविधान के **भाग-17 के अनुच्छेद 343 से 351 (9 अनु.)** में हिन्दी के **राजभाषा** होने से संबंधित उल्लेख किया गया है।
– **विशेष–** वर्तमान समय में **12 अनुसूची और 22 भाषाओं** में हिन्दी का भी स्थान है लेकिन हिन्दी को कहीं भी राष्ट्रभाषा के रूप में स्थान नहीं दिया गया है बल्कि राजभाषा के रूप में हिन्दी का उल्लेख किया गया है।
– **विश्व हिंदी दिवस - 10 जनवरी**
– **10 जनवरी 1975 को नागपुर महाराष्ट्र में प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता तत्कालीन प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी ने की तथा इसमें मुख्य अतिथि के रूप में मौरिसिस के प्रधानमंत्री सर शिवसागर रामगुलाम सम्मिलित हुए थे।**
– **इसी कारण 2006 से 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।**

व्याकरण
– **व्याकरण का जनक महर्षि पाणिनि को कहा जाता है तथा अष्टाध्यायी को व्याकरण की आदि ग्रंथ कहा जाता है।**
– **हिंदी का पाणिनि कामता प्रसाद गुरु को कहा जाता है।**
– व्याकरण (वि + आ + करण) = 'भली भाँति समझना'
– व्याकरण एक ऐसा ग्रंथ है, जो किसी भाषा के शुद्ध उच्चारण, शुद्ध लेखन और शुद्ध प्रयोग का माध्यम होता है।
– व्याकरण के मूल रूप से तीन अंग होते हैं–
(1) वर्ण विचार (2) शब्द विचार
(3) वाक्य विचार
– भाषा की सबसे छोटी इकाई - वर्ण
– लिखित रूप से भाषा की सबसे छोटी इकाई - वर्ण
– मौखिक रूप से भाषा की सबसे छोटी इकाई - ध्वनि
– अर्थ के आधार पर भाषा की सबसे छोटी इकाई - शब्द
– भावार्थ के आधार पर भाषा की सबसे छोटी इकाई - वाक्य

वर्ण विचार
– भाषा की सबसे छोटी इकाई वर्ण है। इसके और टुकड़े नहीं हो सकते। बोलने-सुनने में जो ध्वनि है, लिखने-पढ़ने में वह वर्ण है।
– वर्ण शब्द का प्रयोग ध्वनि और ध्वनि-चिह्न दोनों के लिए होता है। इस तरह वर्ण भाषा के मौखिक और लिखित दोनों रूपों के प्रतीक हैं। अतः हम वर्ण की परिभाषा इस प्रकार दे सकते हैं- 'वर्ण वह ध्वनि है जिसके और खंड नहीं किए जा सकते।'
– किसी भाषा के सभी वर्गों के व्यवस्थित तथा क्रमबद्ध समूह को उसकी वर्णमाला कहते हैं।
– उस मूल ध्वनि को वर्ण कहते हैं, जिसके टुकड़े न हो सकें, जैसे- क् ख् ग् घ् आदि। इनके टुकड़े नहीं किये जा सकते। इन्हें अक्षर भी कहते हैं। अत: वर्ण या अक्षर भाषा की मूल ध्वनियों को कहते हैं। जैसे- 'घट' पद में घ् अ ट् अ ये मूल ध्वनियाँ हैं, जिन्हें वर्ण या अक्षर कहते हैं। इसी प्रकार अन्य पद भी समझिए, **जैसे**
राम – र् + आ + म् + अ
मोहन – म् + ओ + ह् + अ + न् + अ
पुरुष – प् + उ + र् + उ + ष् + अ
रमा – र् + अ + म् + आ
गीता – ग् + ई + त् + आ

वर्ण के प्रकार
– **हिंदी वर्णमाला में मूल रूप से 44 वर्ण होते हैं परन्तु कुछ व्याकरणवेत्ताओं के अनुसार कुल वर्णों की संख्या 53 मानी गई हैं, जो निम्नानुसार है-**

हिन्दी में कुल वर्णों की संख्या – 53					
स्वर 11	अयोगवाह 2	व्यंजन 33	संयुक्ताक्षर 4	उत्क्षिप्त व्यंजन 2	विशिष्ट व्यंजन 1
अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, ऋ	अं, अः	क्, ख्, ग्, घ्, ङ्, च्, छ्, ज्, झ्, ञ्, ट् ठ्, ड्, ढ्, ण्, त्, थ्, द्, ध्, न्, प्, फ्, ब्, भ्, म्, य्, र्, ल्, व्, श्, ष्, स्, ह्।	क्ष्, त्र्, ज्ञ्, श्र्	ड़्, ढ़्	ळ

- ये वर्ण दो प्रकार के होते हैं-

  (I) स्वर (II) व्यंजन

I. स्वर (अच्) :

– जिन वर्णों या ध्वनियों का उच्चारण करने के लिए अन्य किसी वर्ण की सहायता नहीं लेनी पड़ती तथा जिन वर्गों के उच्चारण में हवा बिना किसी रुकावट के मुँह से बाहर आती है, स्वर कहलाते हैं।

– हिन्दी में स्वरों की संख्या 11 मानी गई हैं, ये हैं- अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, ऋ।

स्वरों की मात्राएँ

– 'अ' को छोड़कर प्रत्येक स्वर की मात्रा होती है। जब स्वरों का व्यंजनों के साथ प्रयोग किया जाता है, तो उनकी मात्राओं का ही प्रयोग किया जाता है।

स्वरों का वर्गीकरण –

– उच्चारण काल अथवा मात्रा के आधार पर स्वर निम्नलिखित तीन प्रकार के माने गये हैं-

1. ह्रस्व स्वर –

– जिन स्वरों के उच्चारण समय में केवल एक मात्रा का समय लगे अर्थात् कम से कम समय लगे, ह्रस्व स्वर कहलाते हैं। इन्हें मूल स्वर भी कहते हैं।

– **जैसे-** अ, इ, उ। इनकी संख्या 3 है।

2. दीर्घ स्वर –

– जिन स्वरों के उच्चारण समय में मूल स्वरों की अपेक्षा दुगुना समय, अर्थात् दो मात्राओं का समय लगता है, वे दीर्घ स्वर कहलाते हैं।

– **जैसे –** आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, ऋ,। इनकी संख्या 8 है।

  नोट – ए, ओ, ऐ, औ ये मिश्रित स्वर हैं। ये दो स्वरों के मेल से बनते हैं।

  जैसे – अ + इ = ए

  अ + ए = ऐ

  अ + उ = ओ

  अ + ऊ = औ

3. प्लुत स्वर –

– जिन स्वरों के उच्चारण में दीर्घ स्वरों से भी अधिक समय लगता है, वे प्लुत स्वर कहलाते हैं। इनमें तीन मात्राओं का उच्चारण समय होता है। प्लुत का ज्ञान कराने के लिए ३ का अंक स्वर के आगे लगाते हैं। जैसे-अ ३, इ ३, उ ३, ऋ ३, लु ३, ए ३, ऐ ३, ओ ३, औ ३ !

– प्लुत स्वर का प्रयोग प्रायः दूर से बुलाने में किया जाता है।

अयोगवाह –

– हिन्दी में दो अयोगवाह ध्वनिया हैं- अं और अः।

– अनुस्वार (ं) और विसर्ग (:) दोनों ध्वनियाँ न स्वर हैं और न व्यंजन। इन दोनों के साथ योग नहीं है; अतः ये अयोगवाह कहलाती है।

अनुनासिक –

– जो स्वर मुख और नाक से बोले जाते हैं, वे अनुनासिक स्वर कहलाते हैं। इनके ऊपर चंद्र-बिंदु (ँ) लगाया जाता है। नाक की सहायता से बोले जाने के कारण इन्हें 'अनुनासिक' कहा जाता है; जैसे-गाँव, पाँच।

अनुस्वार –

– जिस स्वर का उच्चारण करते समय हवा नाक से निकलती है और उच्चारण कुछ जोर से किया जाता है तथा लिखते समय व्यंजन के ऊपर (ं) लगाया जाता है, उसे अनुस्वार कहते हैं। जैसे- कंठ, चंचल, मंच, अंधा, बंदर, कंधा।

II. व्यंजन

– जिन वर्गों का उच्चारण स्वरों की सहायता से होता है, वे व्यंजन कहलाते हैं। किसी व्यंजन का उच्चारण तभी किया जा सकता है, जब उसमें स्वर मिला हुआ हो। जिन ध्वनियों का उच्चारण करते समय फेफड़ों से निकलने वाली वायु मुख विवर या स्वर तंत्र के किसी भाग से टकरा कर घर्षण करती हुई या रुक कर बाहर निकलती है, उन्हें व्यंजन ध्वनियाँ कहते हैं।

– हिन्दी वर्णमाला में 33 व्यंजन होते हैं। जैसे-क्, ख्, ग् आदि।

– इनका उच्चारण स्वर लगाकर ही किया जा सकता है, जैसे क् + अ = क, ख् + अ = ख, ग् + अ = ग। स्वर रहित व्यंजन को उसके नीचे हल् (्) चिह्न लगाकर लिखते हैं।

व्यंजनों का वर्गीकरण –

– प्रयत्न के आधार पर व्यंजनों के भेद-

(i) स्पर्श व्यंजन

क वर्ग	क्	ख्	ग्	घ्	ङ्
च वर्ग	च्	छ्	ज्	झ्	ञ्
ट वर्ग	ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्
त वर्ग	त्	थ्	द्	ध्	न्
प वर्ग	प्	फ्	ब्	भ्	म्

(ii) अंतस्थ व्यंजन – य्, र्, ल्, व्

(iii) ऊष्म व्यंजन – श्, ष, स्, ह्

ENGLISH

ARTICLES

- अंग्रेजी में a, an और the को Articles कहते हैं। ये दो 'प्रकार के होते हैं –
  – Indefinite Articles – a, an
  – Definite Article – the

(1) Indefinite Article –

- A तथा an का प्रयोग साधारणतया उन Nouns के पहले होता है जिनको गिना जा सके जैसे – A chair is made of wood. इस वाक्य में chair को गिना जा सकता है अतः इसके पूर्व a का प्रयोग हुआ है wood (लकड़ी) को यहाँ गिना नहीं जा सकता। अतः इसके पहले Indefinite Article का प्रयोग नहीं हुआ है।

(2) Definite Article-

- यह निश्चित Noun के पहले प्रयोग होता है। जैसे – I went to call the teacher (the teacher of our class).

1. Use of 'A' and 'An' – Indefinite Articles

'A' का प्रयोग

नियम –

(a) Indefinite Article 'a' का प्रयोग साधारणतया उन Nouns के पूर्व किया जाता है जिनकी गिनती की जा सकती है और जिनका उच्चारण व्यंजन (Consonant) की ध्वनि से होता है । जैसे – a dog, a woman, a horse, a boy, a table, आदि ये शब्द क्रमशः 'ड', 'व', 'ह', 'ब' तथा ट ध्वनि से आरम्भ होते हैं। अतः Article 'a' इनके पूर्व लगा है।

(b) जब 'u' की आवाज 'यू' हो। जैसे – a university, a European, a useful thing, a unit.

'An' का प्रयोग।

नियम –

(a) Indefinite Article an' का प्रयोग उन शब्दों से पहले होता है जो किसी स्वर (a, e, i, o, u) से प्रारम्भ हों और जिनका उच्चारण भी स्वर की तरह होता हो। जैसे – an elephant, an ass, an orange, an umbrella, an inkpot.

(b) जिन शब्दों में h' शान्त रहता है, उनसे पहले 'an' का प्रयोग होता है। जैसे – an hour, an honest man, an honourable man.

- A तथा An का प्रयोग निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर समझा एवं प्रयोग किया जा सकता है।

1. प्रथम बार प्रयुक्त होने वाले एकवचन गिनने योग्य संज्ञाओं (Singulaar Countable Nouns) के पहले:
- I have a book.
- She lives in a hut.
- He saw an old man.
- Mr Sharma is an umpire in this match.

2. ऐसी एकवचन पूरक संज्ञाओं (Noun Complements) से पूर्व जो किसी पेशे या व्यवसाय (profession) से सम्बन्धित हों:
- She is a nurse.
- He is an engineer.
- Neeraj is a doctor.
- She is an actress.

3. Adjective + Noun की स्थिति में:
- a big elephant.
- an old woman.
- an ugly child.
- a useful book.

4. ऐसी अभिव्यक्तियों के लिए जो मूल्य, गति, अनुपात आदि का बोध कराती हों:
- two rupees a kilo, six times a day, eighty rupees a dozen, 20 km an hour, ten rupees d meter, इत्यादि।

5. संख्यात्मक/मात्रात्मक अभिव्यक्तियों से पूर्व:
- a pair, a couple, a dozen, half a dozen, a hundred, a thousand, a lot, a great deal, a great man, a quarter, a million इत्यादि।

6. 'a' तथा 'an' का प्रयोग 'एक-से' (same) के अर्थ में भी होता है:
- Birds of a feather flock together.
- These are two sides of a coin.
- Men of a mind always group together.
- Take two at a time.

7. Mr/ Mrs / Miss + surname के पहले वक्ता से उनका परिचय न होने का भाव दर्शाने के लिए a का प्रयोग होता है:
- a Mr Sharma, a Mrs Mathur, a Miss Gupta इत्यादि।
- a Mr Sharma से आशय ऐसे व्यक्ति से है, जो Mr Sharma के नाम से पुकारा जाता है परन्तु वक्ता से अपरिचित है; परिचित अवस्था में केवल Mr Sharma या Mrs Mathur .... लिखते हैं।

Exercise : 1

Fill in the blanks with 'a' or 'an':

रिक्त स्थानों को 'a' अथवा 'an' से भरिये–

1. He was .... wise teacher.
2. It was .... long way to the forest.
3. Now cricket has become .... international game.
4. They will be back in .... week.
5. I will finish this work within .... hour.
6. Rani hopes to win .... lottery.
7. He is so good .... umpire that every player respects him.
8. We are to play .... one-day match next week.

9. He is .... honest man of our city.
10. Can you give .... example of a cruel king?
11. My father is .... MLA.
12. My friend's father is .... UDC.

Answers:

1. a	2. a	3. an	4. A
5. an	6. a	7. an	8. a
9. an	10. an	11. an	12. a

2. Use of 'the' – Definite Article

– The एक definite article है और इसका प्रयोग एकवचन व बहुवचन (Singular and Plural Nouns) के पूर्व निम्नलिखित स्थितियों में किया जाता है –

1. एक Noun के पहले जिसका पूर्व में उल्लेख किया जा चुका हो:

– I saw a lion. The lion was sleeping under a tree.
पहले वाक्य में मैंने एक शेर देखा। (दूसरे वाक्य में वही) शेर पेड़ के नीचे सो रहा था।

– We heard a noise. The noise came from a neighbour's house.

2. Adjectives की Superlative Degree के पहले:

– Ravi is the best singer in the school.
– My uncle is the richest man in the town.

अपवाद :

– किसी सम्बन्धवाचक विशेषण (Possessive Adjective) जैसे: my, his, her, their, your, our के बाद Adjective की Superlative Degree का प्रयोग होने पर the का प्रयोग नहीं होता, जैसे:
– He is my best friend.
– Mr Dixit is our best teacher.

3. किसी शब्द समूह (Phrase) या उपवाक्य (Clause) से सुनिश्चित होने वाले Noun के पहले:

– The girl in the blue skirt is my sister.
– The man with a little nose is our principal.
– The cars made in our factory are the strongest ones.
– The book on the table belongs to the library.
– The man who went out is an excellent singer.

4. ऐसे noun के पहले जो अपनी सम्पूर्ण जाति (the whole class or race) का बोध कराता है:

– The dog is a faithful animal. (यहाँ अर्थ 'समस्त कुत्ता जाति') से है।
– The elephant has a long trunk.
– The cat likes milk.

5. नदियों, सागरों, महासागरों, खाड़ियों, मरुस्थलों, द्वीप-समूहों, पर्वत श्रृंखलाओं, नहरों, जंगलों तथा देशों के बहुवचनीय नामों के पहले:

– The Ganga, The Yamuna (rivers)
– The Bay of Bengal (बंगाल की खाड़ी)
– The Arabian Sea (अरब सागर)
– The Gulf of Mexico (मेक्सिको की खाड़ी)
– The Thar desert, The Sahara Desert (सहारा मरुस्थल)
– The Himalayas (हिमालय पर्वत शृंखला)
– The West Indies, The UK, The USA (संयुक्त राज्य अमेरिका)

Note:

– झीलों के नाम के पूर्व Lake, पर्वत या चोटी के नाम के पूर्व Mount व किसी अन्तरीप के नाम से पूर्व Cape शब्द का प्रयोग होने की स्थिति में the का प्रयोग नहीं होता है, जैसे: Cape Camorin, Mount Everest, Lake Mansarovar इत्यादि।

6. संज्ञा (Noun) की तरह प्रयुक्त होने वाले विशेषण (Adjective) शब्दों के पूर्व the का प्रयोग होता है:

– The brave always rule over the earth. (बहादुर व्यक्ति)
– The rich should help the poor. (अमीर व्यक्ति)
– The weak can never do anything. (कमजोर व्यक्ति)

7. विश्व में अपने ढंग की अनोखी अथवा एकमात्र वस्तुओं के लिए:
the sun, the moon, the sky, the earth, the world, the Taj, the Wall of China.

8. दिशाओं के नाम के पहले:
the east, the west, the south, the north.

9. ऐसे नामों के पहले जो Adjective + Noun के रूप में हों:
the National Highway, the New South Coast, the Gold Coast.

10. धार्मिक पुस्तकों, वाद्य-यन्त्रों एवं क्रमवाचक संख्याओं से पूर्व:
the Geeta, the Bible, the Quran, the Ramayana, the violin, the flute, the fourth, the last, the next, इत्यादि।

11. Comparative Degree के दो बार प्रयोग की स्थिति में:

– The more you have, the more you want.
– The sooner, the better.
– The higher you go, the cooler you feel.
– The better I know her, the more I admire her.

12. जब किसी Proper Noun (व्यक्तिवाचक संज्ञा) की तुलना किसी अन्य प्रसिद्ध व्यक्ति, स्थान या वस्तु से की जाती है:

– Kalidas is the Shakespeare of India.
– Kashmir is the Switzerland of Asia.

13. धर्म, समुदाय, जाति, राष्ट्रीयता, राजनीतिक दलों, जहाजों, रेलगाड़ियों, हवाई जहाजों, जलपोतों आदि के नाम के पहले:
the Hindus, the Sikhs, the Jats, the Vaishnavas, the English, the Indians, the Americans, the Congress, the BJP., the Nilgiri, the Kanishka, the Vikrant, the Chetak Express.

विगत वर्ष के प्रश्न-पत्र

भाग – अ
मानसिक योग्यता

1. संख्या श्रृंखला श्रृंखला में अज्ञात अंक का पता कीजिए - 3, 6, 11, 18, ?
(A) 22 (B) 23
(C) 24 (D) 27 **[D]**

2. बेमेल को पहचानें।
(A) कोविड-19 (B) एचआईवी-एड्स
(C) चेचक (D) कैंसर **[D]**

3. ऑक्सीजन : जलना :: कार्बनडाइऑक्साइड : ....
(A) अलग करना (B) बुझाना
(C) झाग (D) विस्फोट **[B]**

4. लुप्त को ज्ञात कीजिए
2B, 4C, 8E, 14H ....?
(A) 16K (B) 201
(C) 20L (D 22L **[D]**

5. एक संख्या का चयन कीजिए जो दिए गए समूह की संख्याओं के समरूप है -
दिया गया समूह : 363,489,579
(A) 382 (B) 471
(C) 281 (D) 562 **[B]**

6. निम्नलिखित अक्षर श्रेणी में रिक्त पद कौन-सा होगा?
$\frac{A}{4}, \frac{D}{9}, \frac{H}{15}, \frac{M}{22}, ?$
(A) $\frac{R}{30}$ (B) $\frac{S}{30}$
(C) $\frac{Q}{31}$ (D) $\frac{Q}{30}$ **[B]**

7. निम्नलिखित श्रृंखला को पूरा करें- 6, 12, 36, 144, 720, ...?
(A) 4320 (B) 2843
(C) 8249 (D) 6825 **[A]**

8. 31 दिनों के महीने में तीसरा गुरुवार 16 तारीख को पड़ता है। तो महीने का आखिरी दिन क्या होगा?
(A) पाँचवा शुक्रवार (B) चौथा बुधवार
(C) चौथा शनिवार (D) पाँचवा गुरुवार **[A]**

9. प्रश्न चिन्ह के स्थान पर क्या आएगा?
प्रवाह : नदी :: स्थिर : ?
(A) तालाब (B) महासागर
(C) समुद्र (D) बाँध **[D]**

10. एक परिवार में P, Q की पुत्री है और Q, R की माता है R, T का पिता है तो P, T से किस प्रकार सम्बन्धित है?
(A) बुआ/मौसी (B) माता
(C) बहन (D) दादी/नानी **[A]**

11. शब्दों की विषम जोड़ी को चुनिये-
(A) गाय : बछड़ा (B) कुत्ता : कुतिया
(C) शेर : शावक (D) कछुआ : कुर्म (Turtle) **[B]**

12. लुप्त संख्या ज्ञात कीजिए –

15	12	90
16	13	104
12	18	?

(A) 129 (B) 100
(C) 119 (D) 108 **[D]**

13. 4 से 5 बजे के बीच किस समय घड़ी की सुइयां विपरीत दिशा में होंगी?
(A) 4 बजकर $52\frac{2}{11}$ मिनट (B) 4 बजकर 42 मिनट
(C) 4 बजकर $54\frac{6}{11}$ मिनट (D) 4 बजकर 49 मिनट **[C]**

14. चार शब्द दिए गये हैं जिनमें से तीन एक जैसे हैं और चौथा भिन्न है। विषम का चयन कीजिए-
(A) मजदूरी (B) मानदेय
(C) जेबखर्ची (D) वेतन **[C]**

15. B, A का पति है। B, C का पिता है। D, A का पुत्र है। D का C से क्या सम्बन्ध है?
(A) पत्नी (B) पति
(C) बहन (D) भाई **[D]**

16. एक निश्चित कूट भाषा में –
LEFT को कूटबद्ध किया है 07 के रूप में
RIGHT को कूटबद्ध किया है 08 के रूप में
उसी कूटभाषा में STRAIGHT को कूटबद्ध किया जाएगा-
(A) 16 (B) 03
(C) 20 (D) 12 **[b]**

17. निम्नलिखित श्रृंखला में प्रश्न चिन्ह के स्थान पर कौन-सा विकल्प आएगा?
EGK, HJN, ?, NPT, QSW
(A) KMQ (B) QMK
(C) QKM (D) LMC **[A]**

18. एक तस्वीर में एक आदमी की ओर इशारा करते हुए, एक महिला कहती है कि, "वह मेरे भाई के दादा के बेटे का बेटा है।" वह आदमी महिला से किस प्रकार संबंधित है?
(A) चाचा (B) पिता
(C) भाई (D) साला **[C]**

19. श्रृंखला को ध्यान से देखिये -
$7\frac{1}{7}, 8\frac{2}{6}, 9\frac{5}{5}, 16\frac{2}{3}, ?$
अगला श्रृंखला नम्बर क्या होगा?
(A) $35\frac{3}{4}$ (B) $16\frac{4}{4}$
(C) $\frac{50}{2}$ (D) $15\frac{2}{4}$ **[C]**

20. निम्न के लिए सही उपमान है?
दवाई : बीमारी :: पुस्तक : ?
(A) ज्ञान (B) अध्यापक
(C) लेखक (D) सम्पादक **[A]**

21. अपने घर से R उत्तर की तरफ 15 किमी. गया। उसके बाद वह पश्चिम की ओर मुड़ा तथा 10 किमी. पूरे किये। उसके बाद वह दक्षिण की ओर मुड़ा तथा 5 किमी. पूरे किये। अन्त में पूर्व की ओर मुड़ते हुए उसने 10 किमी. पूरे किए। वह अपने घर से किस दिशा में है?
(A) पूर्व (B) पश्चिम
(C) दक्षिण (D) उत्तर **[D]**

22. दो मित्रों की आयु का अनुपात 7:9 है, जबकि 10 वर्ष बाद यह अनुपात 19:23 हो जाएगा। अब से 7 वर्ष बाद उनकी औसत आयु कितनी होगी?
(A) 33 वर्ष (B) 35 वर्ष
(C) 36 वर्ष (D) 39 वर्ष **[D]**

23. प्रश्न चिन्ह के स्थान पर लुप्त शब्द चुनें।
तेल: स्नेहन :: पानी : ?
(A) जल-योजन (B) प्यास
(C) पेय (D) वर्षा **[a]**

24. एक समान शब्द चुनिये
मटर : चना :: दालें : ....
(A) चावल (B) जौ
(C) फलियाँ (D) नारियल **[C]**

25. दिए गए विकल्पों में से कौन-सा विकल्प विषम है?
(A) हॉकी: स्टेनले कप
(B) बैड़मिन्टन : विजय हजारे कप
(C) क्रिकेट: आई पी एल
(D) फुटबॉल: फीफा **[B]**

26. निम्न में से भिन्न का चयन करें -
(A) जनवरी, मई (B) अप्रैल, जून
(C) जुलाई, अगस्त (D) जनवरी, दिसम्बर **[B]**

27. उमेश सतीश से लम्बा है। सुरेश लम्बाई में नीरज से छोटा किन्तु उमेश से लम्बा है। उनमें सबसे लम्बा कौन है?'
(A) नीरज (B) सतीश
(C) उमेश (D) सुरेश **[A]**

28. चार खिलाड़ी P, Q, R और S एक खेल के मैदान में इस प्रकार खड़े हैं कि Q, P के पूर्व में है। R, P के दक्षिण में और S, P के उत्तर में है। S, Q की किस दिशा में खड़ा है?
(A) उत्तर (B) दक्षिण
(C) उत्तर-पश्चिम (D) दक्षिण-पूर्व **[C]**

29. दिए गए विकल्पों में से सम्बन्धित शब्द चिन्हित कीजिए-
फिल्म : निर्देशक :: पत्रिका: ?
(A) प्रकाशक (B) लेखक
(C) सम्पादक (D) पाठक **[C]**

30. निम्नलिखित में से सबसे छोटी संख्या ज्ञात कीजिए।
(A) $-\frac{12}{19}$ (B) $-\frac{27}{13}$
(C) $-\frac{56}{28}$ (D) $-\frac{3}{14}$ **[B]**

31. यदि शब्द BREAK को अंग्रेजी वर्णमाला के क्रम में व्यवस्थित किया जाये तो कितने वर्णों का स्थान अपरिवर्तित रहेगा?
(A) एक (B) तीन
(C) दो (D) कोई नहीं **[A]**

32. निम्नलिखित में से कौन-सा अन्य से संबंधित नहीं है?
(A) एयर कंडीशनर (B) हेयर ड्रायर
(C) कैलकुलेटर (D) जनरेटर **[C]**

33. छः मित्र A, B, C, D, E, F केंद्र की ओर मुँह करके एक वृत्त में खड़े हैं। B, F और C के बीच में है। A, E और D के बीच में है और F, D के एकदम बाएं है। A और F के बीच में कौन है?
(A) D (B) E
(C) C (D) B **[A]**

34. ANCIENT संबंधित है MODERN से, उसी प्रकार ABUNDANT संबंधित है-
(A) Plentiful (B) Ample
(C) Scarce (D) Bountiful **[C]**

35. निम्न में से कौन-सा दूसरों से सम्बन्धित नहीं है?
(A) राजस्थान (B) पंजाब
(C) बिहार (D) दिल्ली **[D]**

36. निम्न में से कौन-सी संख्या सबसे छोटी है?
(A) $\frac{7}{3}$ (B) $\frac{13}{7}$
(C) $\frac{5}{6}$ (D) $\frac{12}{13}$ **[C]**

37. कोडिंग : डिकोडिंग
यदि DOG = 4157, तो CAT = ?
(A) 3142 (B) 4143
(C) 3120 (D) 3221 **[C]**

38. किसी तख्त पर पाँच मित्र A, B, C, D और E इस प्रकार बैठे हैं कि
(a) C, A के निकटतम बायें बैठा है
(b) B, A और D के दायें बैठा है
(c) E, C और A के बायें बैठा है
बीच में कौन बैठा है?
(A) C (B) D
(C) A (D) B **[C]**

39. D का एक भाई A है। D पुत्र है P का । B पिता है P का। सम्बन्ध के सन्दर्भ में A क्या है B का?
(A) दादाजी (B) पोता
(C) भाई (D) पुत्र **[b]**

40. एक आकृति अन्य के समान नहीं है। भिन्न आकृति का चयन कीजिए
(A) 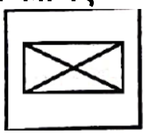 (B) 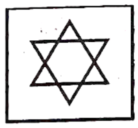
(C) 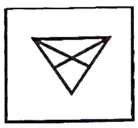 (D) 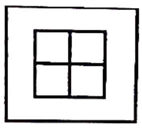 **[B]**

41. एक निश्चित कूट भाषा में -
PARIS को लिखा जाता है NYPGQ
RUSSIA को लिखा जाता है PSQQGY
तो फिर 'CHINA' को उसी कूट भाषा में कैसे लिखा जाएगा?
(A) FALGY (B) QPGLY
(C) AFGLY (D) NTGKY **[C]**

विज्ञापन

घर बैठे करे तैयारी
लक्ष्य क्लासेज, उदयपुर के साथ

लक्ष्य क्लासेज उदयपुर

OFFLINE & LIVE FROM CLASSROOM

BSTC & PTET

New Course Launch

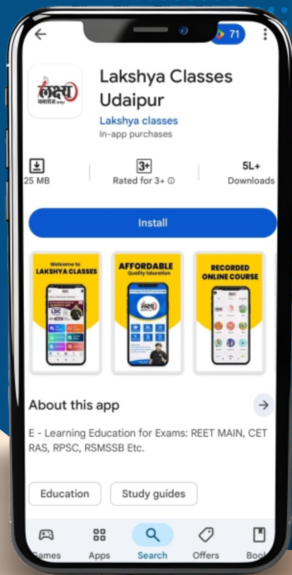

LIVE कोर्स के साथ में पाएं
FREE RECORDED COURSES

• BSTC हेतु अन्य प्रमुख पुस्तकें •

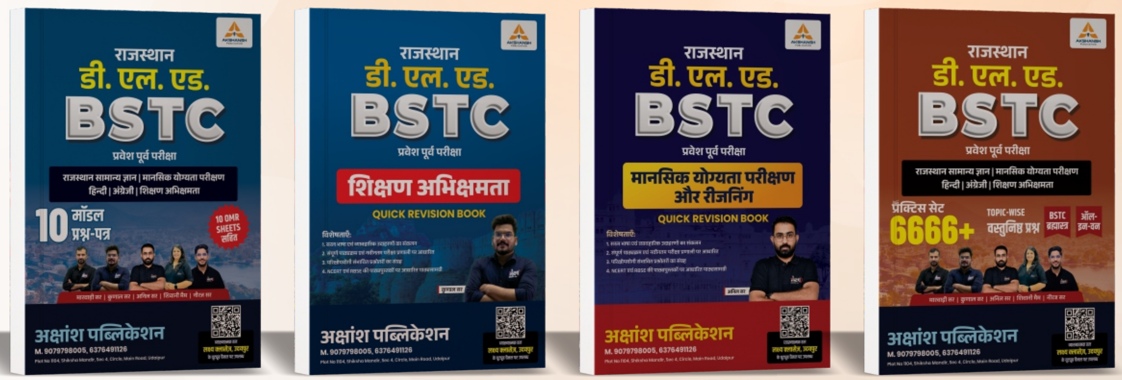

S. No. : AP0028
CODE : APGC

MRP : ₹799

INSTAGRAM FACEBOOK YOUTUBE TELEGRAM

सफलता के पथ पर सबसे तेज उभरता हुआ संस्थान
लक्ष्य क्लासेज™

M. 9079798005, 6376491126
Plot No 1104, Shiksha Mandir, Sec 4, Circle, Main Road, Udaipur